परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट : www.dharmashree.org

वर्ष १४ अंक २ फाल्गुन, युगाब्द ५११७ त्रैमास जून २०१५

संपादक मंडल :
संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
पं. अशोक पारीक,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
श्री. राहुल मारुलकर, पुणे

मुद्रक :
मंदार प्रिंटर्स,
७५६, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष :(०२०) २४५७६१४२,
२४५७८९४२
mandarprinters@gmail.com

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
– संपादक

अनुक्रम

४ विनम्र निवेदन
६. ''मोक्षमंदिर का चौथा द्वारपाल''
१२. अंतर्राष्ट्रीय वेद परिषद
१४. मानसिक संतुलन ही योग है।
१८. एक अनूठा एहसास.....
१९. पद्मभूषण – पंचकम्
२०. अधिकमास
२१. प्रतिष्ठानने मनाया रजत जयंती महोत्सव
२३. गीता परिवार, जयसिंगपुर ने रचा इतिहास।
२४. बाल संस्कार शिविर, नामलगांव
२६. रजत जयंती महोत्सव, ढालेगांव
२७. श्रीमद् भागवत कथा, पानीपत
२८. श्रद्धालुओं को आवाहन
३०. भक्तशिरोमणी हनुमान जी ने जोडा.....
३३. महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान एक दृष्टिक्षेप में
३६. स्व. पं. पुरुषोत्तम शास्त्री फडके

३५. संत श्री गुलाबराव महाराज शताब्दि भक्तिमहोत्सव
३८. गुरुपौर्णिमा महोत्सव ३९. श्री हरिहर भक्ति महोत्सव

*** आवश्यक सूचना ***

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेद विद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''धर्मश्री'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें -

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री'' व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर-305007 **फोनः** 0145-2660498, **मो.** 09414003498, **फैक्सः** 0145-2662811 ई-मेल : bhalchandravyas@yahoo.co.in

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
श्रीमान् वेणुगोपालजी रामेश्वरलालजी करवा
मे. मथुरा ॲग्रो-इन्डस्ट्रीज, सोलापुर। **साभिनंदन धन्यवाद !**

विनम्र निवेदन

आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री अवधेशानंद गिरि जी महाराज को अक्षय्य तृतीया दि. २१ एप्रिल के दिन हरिद्वार क्षेत्र में भारत माता मंदिर के अध्यक्षपद का दायित्व समर्पण समारोह प्रात: स्मरणीय पू. गुरुस्वामीजी के मंगल हाथों संपन्न हुआ। २०१३ में आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में मेरा पट्टाभिषेक होने के कारण इस समय लोगों में संभ्रम की अवस्था निर्माण न हो इस दृष्टि मैं सभी के लिए विनम्र निवेदन करना अपना कर्तव्य मानता हूँ।

पुण्यतोया भगवती गंगा माता के पावन तटपर दि. १२ मई २०१३ के शुभ दिन मुझे आध्यात्मिक उत्तराधिकारी घोषित करने हेतु आयोजित पट्टाभिषेक समारोह में पू. गुरुदेव स्वामीजी महाराजने मुझे अत्यंत कृपापूर्वक रजत दंड, कमंडलु, एवं स्वयं की पादुकाएँ प्रसाद के रूप में प्रदान की, तथा आँसूभरे नेत्रों के साथ गद्‌गद् कंठसे मंचासीन अनेक संत–महात्मा और उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष यह घोषणा की कि, 'मेरी आयु के अठ्ठाईसवे वर्ष से अबतक मैंने जो कुछ जप, तप, ध्यान, धारणा तथा साधना एवं स्वाध्याय से पुण्य अर्जित किया वह सब में अपने शिष्य स्वामी गोविंद देव गिरि को प्रदान करता हूँ।' पू. गुरुदेव ने इसके घटना के पूर्व दिन ११ मई को भारत सदन के सभागृह में पूजन के अवसर पर एकत्रित शताधिक लोगों के सामने भी यही घोषित किया था।

आध्यात्मिक लक्ष्य को सामने रखकर ईश्वरशरण जीवन यापन करने का प्रयास करनेवाले मेरे जैसे अकिंचन साधक के लिए यह जीवन का सर्वाधिक रोमांचक क्षण था जिसने मुझे धन्य धन्य कर दिया। संस्कृति की सेवा और आध्यात्मिक साधना के मार्गपर निरंतर आगे बढने का प्रयास करनेवाले पथिक को इससे बडा पाथेय क्या हो सकता है?

आध्यात्मिक उत्तराधिकार के दायित्व समर्पण के पश्चात् बचता है, लौकिक व्यवस्थाओं का दायित्व समर्पण! पू. गुरुदेव के द्वारा इस कार्य के लिए सुविख्यात आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री अवधेशानंद गिरि जी का चयन किया गया और समारोहपूर्वक यह कार्य संपन्न हो रहा है यह अतीव आनंद की बात है। पू. गुरुदेव के इस निर्णय का हम सभी हृदयपूर्वक स्वागत करते हैं।

विशेष रूप से मुझे इस समय कुछ निवेदन इसलिये भी करना चाहिए कि संदिग्धता के कारण किसी प्रकार का भ्रम न फैलें। क्योंकि, विगत अनेक वर्षों से पू. गुरुदेव के स्थानपर अध्यक्ष पद किसका रहेगा, इसके बारे में चर्चा चलती रही है। जिसमें कभी मेरा भी नामोल्लेख रहा है। इस विषय में जब भी पू. गुरुदेव ने मुझसे कुछ बात छेडी तब हर समय मैंने एक ही बात कही, कि किसी भी प्रकार का निर्णय आप अपनी रुचि के अनुसार किंतु यथासंभव शीघ्र कर लें, मैं उससे सहमत ही रहूंगा। किंतु, यदि इस विषय को लेकर कोई भी विवाद खडा होता है तो, सबसे पहले मैं पीछे हट जाऊँगा।

इन सब बातों का उल्लेख संभावित किंवदंतियों को न फैलने देना इतना ही है। पू. गुरुदेव के निर्णय से मैं इसलिए भी शांत, समाधानी और प्रसन्न हूँ कि, भारतमाता की सेवा करने के जिन अंगों को मैंने आरंभ से ही प्राथमिकता दी है उन कार्यों के लिए भी पर्याप्त समय देने की आवश्यकता है। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के जम्मू से इंफाल तथा ऋषिकेश से कर्नाटक तक चोबीस वेदविद्यालय कार्यरत हैं। गीता परिवार के द्वारा बाल संस्कार का कार्य नियमित चलनेवाले सैंकडों संस्कार केंद्रों के माध्यम से देश के पंद्रह प्रदेशों में निरंतर बढ रहा है। संत ज्ञानेश्वर गुरुकुल के माध्यम से साधना एवं संत साहित्य के प्रचार का कार्य भी निरंतर वर्धिष्णु है। वैदिक साहित्य का

पुनरुत्थान, गीता के माध्यम से बाल संस्कार कार्य का विस्तार तथा भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के प्रति सावधानी, यही मेरे अखंड चिंतन के तथा सभी कार्य योजनाओं के मूल उद्देश्य रहे हैं। मेरी दृष्टि में भारतमाता की यही प्रधान सेवा रही है जो पूजा की भावनासे मैं करता आया हूँ। जीवन में मैं किसी भी व्यक्ति या संस्था के साथ थोडी बहुत मात्रा में जुडा हूँ तो केवल इसी दृष्टिकोन से कि, उस माध्यम से हेतु कुछ मात्रा ये तो भी पोषण प्राप्त कर सकें।

उपरोक्त चिंतनधारा एवं जीवनशैली के कारण भवन, भूखंडादि अचल संपदा तथा स्वर्णवित्तादि चल संपत्ति को भी मैंने अधिक महत्त्व नहीं दिया। छात्रों का, कार्यकर्ताओंका, तथा साधकों का संपोषणही मुझे अधिक सार्थक लगा है।

व्यक्तिगत रूप से एक साधारण बँक अकाउंट के अलावा सौ रुपयों की संपत्ति भी मेरे नाम नहीं है। व्यक्तिपूजा से उपर उठकर केवल तत्त्वनिष्ठा में विहार करने का अभ्यास होने के कारण आज तक न किसी से भी मैंने अपना पादप्रक्षालन करवाकर चरणपूजा करवायी, न स्वयं को किसी का गुरु माना। मेरे संदर्भ में गुरुदीक्षा का अर्थ संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज से साधकों का संबंध जोडना और आवश्यकता होने पर साधकों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन करना इतना ही रहा है। मेरा यह भाव अखंड सुदृढ रहे इसीलिए गुरुपूर्णिमा के दिन आजतक कभी भी मैंने न किसी से तिलक करवाया न माल्यार्पण भी। भगवद्रूप विश्व का स्वयं को केवल सेवक मानने के कारण यह सारी मान बडाई आरंभ से ही मुझे अरुचिकर रही है। इसीलिए तो पिछले हरिद्वार कुंभ में एक बार तो शाही स्नान गुरुदेव के आग्रहवशात् किया। किन्तु, शाही स्नान पूर्ण होते ही गुरुदेव को साष्टांग वंदन करते हुए यह कह दिया कि, 'मेरे जीवन का अंतिम शाही स्नान आज हो गया।' सजधज करके, वाहन में बैठ करके वैभव के साथ गंगाजी जाने के बजाय ठाकुर जी को साथ लेकर पाँच पचास लोगों के साथ संकीर्तन करते हुए गंगाजी जाना मेरी स्वाभाविक रुचि के अधिक अनुकूल है।

यह मेरी सहज प्रवृत्ति होने के कारण संपत्ति की देखरेख और तद्विषयक अनेक कार्यों का निर्वाह तथा कुंभादि महोत्सवों के सफल संचालन के लिये स्वामी अवधेशानंदजी जैसा सक्षम एवं कुशल अध्यक्ष प्राप्त होना यह मेरे और हम सभी के लिए वास्तव में प्रसन्नता का विषय है। साधक के जीवन में गुरु–आज्ञा पालन का स्थान सर्वोपरि है। वात्सल्यमूर्ति श्री गुरुदेव की आज्ञा का पालन आजीवन करते रह कर जीवन गंगा जी जैसा बन जाय यही चाह है। यही शिष्यधर्म का पालन भी है।

हिंदु मठ–मंदिर, आश्रम तथा धार्मिक संस्थानों में उत्तराधिकार की बात कों लेकर निर्माण होनेवाले कलह हमारे देश और समाज का दुर्भाग्य है। विशेष रूप से नई पीढी के युवकों के लिए ये कलह के प्रसंग बहुत गलत संदेश पहुँचाते हैं। हम भारतमाता मंदिर में ऐसा नहीं होने देंगे इसका मैं विश्वास दिलाता हूँ। एक न्यासी के रूप में कार्यरत रहकर भारतमाता की सेवा करने में मुझे बहुत प्रसन्नता है। जीवनभर में केवल एक ही पद की चाह रही है, प्रिय भगवान श्रीकृष्ण के पावन, सुकोमल पदपद्म मेरे हृदय में निरंतर विराजमान रहें। यह जीवन इतना शून्यवत् बन जाए कि जिसके साथ मैं जुड जाऊँ उसका मूल्य दसगुना हो जाए। अत्यंत तीव्र इच्छा यही है कि सारे जीवन की बाजी लगाकर भी भारतमाता की सेवा में स्वल्प तो भी कार्य कर सकें और पूरे मन से कह सकें –

'मुझे तोड लेना वनमाली, उसी राह पर देना फेंक।
मातृभूमि पर शीष चढाने, जिस पथ जाते वीर अनेक।'
'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें ।'

जय श्रीकृष्ण!

श्री ज्ञानेश्वर पदाश्रित

स्वामी गोविंददेवगिरि

योगवासिष्ठ (९)

''मोक्षमंदिर का चौथा द्वारपाल''

(भाग-२)

संत-संग

विगत अंक में हमने मोक्षमंदिर के चौथे द्वारपाल 'संत-संग' के अन्तर्गत मोक्ष-पथ पर अग्रसर होने की दृष्टि से संतों के तेजोमय व्यक्तित्व, निर्मल स्वभाव के विषय में जानकारी प्राप्त की। प्रस्तुत अंक में प.पू. गुरुदेव हमें सच्चे संतों के लक्षणों से परिचित करवाते हुए इस तथ्य को भी सुस्पष्ट कर रहे हैं कि संत-सहवास से मोक्षमार्ग कैसे आसान हो जाता है।

संतों के लक्षण

संतों का पहला लक्षण है **तितिक्षा**। तितिक्षा याने सहनशीलता। फिर भी, सहनशीलता और तितिक्षा में अंतर है। कभी-कभी इच्छा न होने पर भी सहन करना पड़ता है। नई बहू घर में आई है। सास क्रोधी स्वभाव की है। छोटे-छोटे कारणों से उसके मुँह का तोपखाना आग उगलता है। अब बेचारी बहू क्या करे? सहन करती है। उसे पता है कि बिना किसी उचित कारण के सास डाँट रही है, फिर भी वह सहन करती है। परंतु जब सास बाहर जाती है, तो मन ही मन कहती है – ''पटकी होउ दे तिला, भवानी आई रोडगा वाहीन तुला।'' (यह पंक्ति एकनाथ महाराज के 'भारूड' से ली है। अर्थ है, ''हे भवानी माता, मेरी सास को हैजा हो जाए, वह मर जाए। ऐसा हुआ तो मैं तुम्हें रोट (मोटी रोटी) चढ़ाऊँगी।'' यह सब मन में होता है पर बाहर मुँह से वह कुछ भी नहीं बोलती। यह सहनशीलता है; तितिक्षा नहीं।

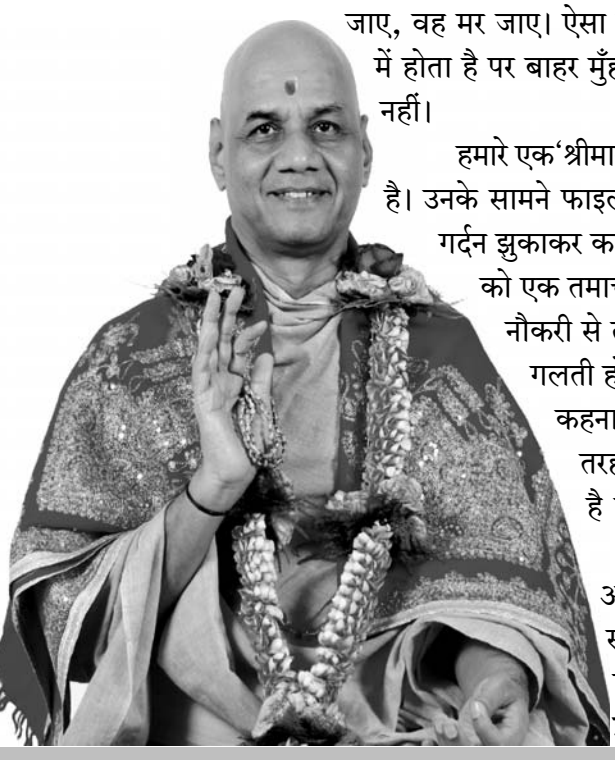

हमारे एक'श्रीमान्' कार्यालय में काम करते हैं। ऊपर का अधिकारी उन्हें बुलाता है। उनके सामने फाइल पटकता है और कहता है, 'तुम मूर्ख हो'। हमारे 'श्रीमान्' गर्दन झुकाकर कहते हैं, 'जी हाँ' मगर उसके मन में आता है कि – 'इस साहब को एक तमाचा जड़ दूँ और कह दूँ, 'तुम ही मूर्ख हो। मैं चला, मैंने तुम्हारी नौकरी से त्यागपत्र दिया है।' परंतु ऐसा वे बोल नहीं सकते। साहब की गलती हो; तो भी वे चुपचाप उसकी डाँट सहन करते हैं। ''जी, सर!'' कहना पड़ता है उसे। यह सहनशीलता हैं, परंतु तितिक्षा नहीं है। इस तरह व्यवहार में सैंकड़ों बार हमें सहनशीलता से काम लेना पड़ता है तो क्या हम संत बन गए?

भगवान् शंकराचार्य ने कहा है, ''सहनं सर्व दुःखानां अप्रतिकारपूर्वकं चिंता विलाप रहितं सा तितिक्षा निगद्यते''।। अर्थात् सारे दुःखों को, प्रतिकार न करते हुए, चिंता, विलाप भी न करते हुए सहना याने तितिक्षा। **चिंता नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, प्रतिकार करने की क्षमता होते हुए भी प्रतिकार न करना**

– इस प्रकार की सहनशीलता को तितिक्षा कहते हैं। ज्ञानेश्वर माउली ने भैंसे के मुँह से वेद बुलवाए, निर्जीव दीवार चलाई, 'जिनका ऐसा बल'। उनके लिए क्या 'शाप देना' संभव नहीं था? परंतु उन्होंने शाप नहीं दिया। क्षमता होते हुए भी नहीं दिया। उल्टे-सीधे कटु शब्द मुँह से नहीं निकाले। पानी पर लाठी से आघात किया तो पानी फटता नहीं – पानी पर उस आघात की निशानी भी नहीं रहती। संतों की तितिक्षा ऐसी होती है।

संत करुणायुक्त होते हैं –

संत अपने पर हुए शारीरिक-मानसिक आघात सहन करते हैं; परंतु दूसरे का दुःख वे नहीं देख सकते, वे द्रवित हो जाते हैं। सुभाषितकार कहते हैं, ''सज्जनस्य हृदयं नवनीतं, यद् वदन्ति कवयः तदलीकम्। अन्य देह परितापात् सज्जनो द्रवति, नो नवनीतम्।'' लोग कहते हैं कि सज्जनों के हृदय नवनीत (मक्खन) के समान होते हैं। परंतु यह वचन सत्य नहीं है। अजी, दूसरों के ताप से सज्जन द्रवित होते हैं, परंतु नवनीत नहीं द्रवता, नहीं पिघलता। (उसके लिए उसे अपने को ही 'ताप' होना पड़ता है। स्वयं तपने पर ही नवनीत पिघलता है।)

'करुणा' संतों का व्यवच्छेदक लक्षण है। कोई ज्ञानी होता है; कोई योगी होता है। संत ज्ञानी अथवा योगी होंगे ही, सो बात नहीं। ज्ञानी और करुणायुक्त जो हो वह संत! योगी और करुणायुक्त हो, वह संत! कितने ही ज्ञानी, कितने ही योगी अपनी समाधि में रहे हैं। उनका उद्दिष्ट आत्मोद्धार था। उन्होंने विश्वकल्याण की चिंता नहीं की। प्रह्लाद ने कहा था, ''हे भगवान, मैं अकेला मुक्त होना नहीं चाहता। जो कुछ आपको देना है सब के लिए दीजिए, मुझ अकेले के लिए नहीं।''

तुकाराम महाराज कहते हैं, ''डूबते हैं जन, न देख सकूँ आँखों से। इसीलिए दया उमड़ती है।'' मुक्ताबाई ने ज्ञानियों के राजा से प्रार्थना की थी, ''आपण तरोनि विश्व तारा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा'' (स्वयं तरो और विश्व को तारो। किवाड़ खोलो ज्ञानेश्वर जी। – ये पंक्तियाँ ज्ञानेश्वर महाराज की बहन मुक्ताबाई ने उनसे कही थी, जब वे लोगों की निंदा से दुःखी होकर किवाड़ बंद कर कुटिया में बैठे थे।) संतों के भगवान भी ''कारुण्यसिंधु भवदुःखहारी'' होते हैं। (यह पंक्ति समर्थ रामदास जी की है।)

> प्रेम करना, दूसरों का हित करना, यह तो सुहृदों का स्वभाव ही होता है। संत 'सुहृद' होते हैं। इसके माने ये हुए कि यदि आप उनका अकल्याण करने का प्रयत्न करें तो भी वे आपके कल्याण की ही कामना करेंगे। जैसे वृक्ष। जो वृक्ष लगाये उसे फल दे और जो काटे उसे भी। जैसे चन्दन का वृक्ष। उसे काटो, जलाओं, उसके साथ कुछ भी करो, वह तो सुगन्ध ही देता है।

संत 'सुहृद' होते हैं –

संत 'सुहृद' होते हैं। साधारणतया 'सुहृद' का अर्थ मित्र माना जाता है। वह तो उसके पास की अर्थच्छटा है। परंतु मित्र भिन्न होता है और सुहृद भिन्न। यदि मैं किसी का उपकार करूँ, किसी से प्रेम करूँ, तो वह भी मुझसे प्रेम करने लगता है। मेरी जरूरत के समय वह सहायता करता है। वह है मित्र। 'मित्र' अपने प्रेम का प्रतिसाद चाहता है। वह कृतज्ञ होता है।

'सुहृद' अलग ही होता है। वह प्रतिसाद नहीं, प्रतिध्वनि नहीं। आप प्रेम करते हैं इसलिए नहीं, वह तो पहले से ही प्रेम करता है। और तिस पर वह दूसरे से किसी भी प्रकार की अपेक्षा भी नहीं रखता। मित्रता टूट सकती है। यदि आप प्रतिसाद न दें तो मित्र को गुस्सा आ जाएगा। मित्रता भंग हो जाती है। प्रेम करना, दूसरों का हित करना, यह तो सुहृदों का स्वभाव ही होता है। संत 'सुहृद'

आश्चर्य क्या है?
युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, ''सब देख रहे हैं, कि प्रतिदिन हमारे आस-पास लोग मर रहे हैं, फिर भी हम स्वयं को अमर समझ कर व्यवहार कर रहे हैं।''

होते हैं। इसके माने ये हुए कि यदि आप उनका अकल्याण करने का प्रयत्न करें तो भी वे आपके कल्याण की ही कामना करेंगे। जैसे वृक्ष। जो वृक्ष लगाये उसे फल दे और जो काटे उसे भी। जैसे चन्दन का वृक्ष। उसे काटो, जलाओं उसके साथ कुछ भी करो, वह तो सुगन्ध ही देता है।

ज्ञानेश्वर महाराज का आचरण ठीक ऐसा ही था। उन्हें लोगों ने बहुत सताया; उनके मार्ग में हमेशा काँटे ही बिखेरे, परंतु उन्होंने कभी भी कटुशब्द नहीं निकाले। उनकी साहित्य कृति में कटुता का लवलेश भी नहीं है। **पसायदान** में भी ''दुष्टों की दुष्टता'' जाने दें, इतनी ही प्रार्थना है। जाते–जाते एक बात ध्यान में आई, वह भी बताता हूँ। माउली के 'पसायदान' की यह प्रार्थना श्रीमद् भागवत के एक श्लोक पर किया हुआ भाष्य है। – संसार का कल्याण हो। दुष्टों का? दुष्ट हो; तो भी उसका कल्याण ही हो – यही प्रार्थना भागवतकार ने की है।

संत शांत होते हैं –

योगवासिष्ठकार ने संतों के 'शांत' लक्षण पर बड़ा जोर दिया है। वे अजातशत्रु होते हैं। उनके मन में किसी के लिए भी शत्रुता का भाव नहीं होता। अब यही देखिए न, सारे लोग दुर्योधन को 'दुर्योधन' ही कहते थे। इसमें 'दुस्' उपसर्ग दुष्टता, दोष दिखानेवाला है। इसी कारण धर्मराज उसे हमेशा 'सुयोधन' कहते थे। धर्मराज अजातशत्रु थे।

एक प्रसंग में मुक्ताबाई ने कहा था, ''दांतों ने जीभ काट ली, तो क्या आदमी अपने दांतों को पत्थर मारता है? दांत भी अपने और जीभ भी अपनी।'' ऐसे ही संतों के लिये सभी अपने हैं।

आत्मीयता संतों के स्वभाव में ही होती है, इसलिए वे शांत रह सकते हैं। वे वैर भी किससे करें? वर्षा जोर से हो जाए, बड़ा आघात करे तो भी सागर को वह नहीं चुभती; क्योंकि सागर को तो वह अपना ही रूप लगता है। इसी कारण उसकी शांति बनी रहती है।

ध्यान में लीजिए, 'शांति' एक परिणाम है। विस्तार (व्यापकता) और गहराई (गंभीरता) का परिणाम है शांति। विश्व–प्रेम की भावना के कारण संत स्वभावतः शांत एवं प्रसन्न रहते हैं।

संत भक्त होते हैं

संत भक्त होते हैं – इस कारण भी शांत होते हैं। भक्ति से शांति आ जाती है। भक्ति की जो–जो छटाएँ हैं उन्हें ध्यान में लाइए। ज्ञानेश्वर महाराज ने कहा है – ''यह सारा विश्व भगवान का ही रूप है, ऐसा जिसका दृढ़ भाव है; वह तो ज्ञानी भी है और भक्त भी। सर्वत्र भगवान के ही दर्शन यदि होते हों तो शांति–भंग होगी ही नहीं।'' **भक्ति की दूसरी परिभाषा है,** ''जो विभक्त न हो; वह है भक्त'' (समर्थ रामदास)। वह केवल ईश्वर से ही जुड़ा होता है ऐसी बात नहीं ''जो–जो मिले उसी को माने भगवान।'' यदि ऐसी श्रद्धा हो और हम उनसे अलग हैं ही नहीं, इस प्रकार का भाव हो, तो शांति अपने आप आ ही जाती है। केवल उस परमात्मा की ओर या परब्रह्म की ओर देखकर ही ''तत् त्वम् असि 'ऐसा नहीं कहते तो' 'जो–जो भूत (निर्माण हुई हर वस्तु) है, उसे देखकर जो कहे ''यह तो मैं ही हूँ।'' – तो वह भक्ति भी है और वही सच्चा ज्ञान भी है।

भक्ति की तीसरी परिभाषा है, ''स्वस्वरूपानुसंधानं भक्तिः इति अभिधीयते।'' स्वरूपानुसंधान याने भक्ति। अपने 'स्वरूप' की ओर चित्त की अखंड धारा बहती रहना याने 'भक्ति' स्वात्मतत्त्व ही 'ईश्वर–रूप' ही है। इसी कारण अंतरंग की ओर चित्त का प्रवाह होना याने भक्ति! सभी विषयों में से चित्त निकालकर उसे भीतर की ओर प्रवाहित करना याने विषयों से विरक्त होना। विषयों से विरक्त होना शांतिप्रद ही होता है।

विशेष बात यह है कि भक्ति

प्रश्न - गुरु की आवश्यकता क्यों ?
उत्तर - मार्ग अनदेखा और साजन अनमिला है। उसके लिये चलना और उसका मिलना तब तक असंभव है जब तक कोई उसका पता न बतला दे

में ज्ञान, योग एवं कर्म तीनों मार्ग समाविष्ट होते हैं।

भक्ति में सभी मार्गों का समन्वय

भाव के साथ की हुई एकात्मकता की मार्गक्रमणा याने भक्ति। एकात्मकता (अद्वैत) तो सार्वभौम सिद्धान्त है। भक्ति में ज्ञान, योग एवं कर्म का समन्वय होता है। ज्ञानमार्ग में अपेक्षित क्या होता है? एकात्मकता की अनुभूति। ज्ञान से, विचार से इसे प्राप्त करना मुश्किल है। बुद्धि की अपेक्षा भाव से याने भक्ति से यह अनुभूति अधिक सघन होती है। योग से क्या अपेक्षित है? इंद्रिय-निग्रह। इंद्रिय-निग्रह भी आसन-प्राणायाम की अपेक्षा प्रीति से याने भक्ति से सहजता से साध्य होता है। छोटा-सा बच्चा भी अपनी माँ को चॉकलेट खिलाता है, उसे वह अत्यंत प्रिय होता है, फिर भी माँ से होने वाले प्रेम के कारण याने भक्ति के कारण वह यह बात कर सकता है। कितनी सहजता से इंद्रिय-निग्रह साधा जाता है! वैसे ही कर्मयोग से क्या अपेक्षा रखी जाती है? कर्म करना परंतु फल की आसक्ति न रखना! निरहंकारिता से एवं फलासक्ति छोड़कर यदि कर्म किया जाए तो उसे कर्मयोग कहा जाता है। यदि हम किसी से प्रेम करते हैं तो उसके लिए हम सहज एवं निरपेक्ष कर्म करते ही हैं। माता बालक के लिए या बहन भाई के लिए बीमारी के दिनों में रात-रात भर जागकर सेवा करती रहती है सहजता से एवं निरपेक्षता से। यह कर्मयोग वे भक्ति के कारण आचरण में लाते हैं। इसी कारण भक्ति में ज्ञान, योग, कर्म सभी मार्गों का सहज समन्वय होता है।

संत संग-विवर्जित होते हैं

> आत्मीयता संतों के स्वभाव में ही होती है, इसलिए वे शांत रह सकते हैं। वे वैर भी किससे करें? वर्षा जोर से हो जाए, बड़ा आघात करे तो भी सागर को वह नहीं चुभती; क्योंकि सागर को तो वह अपना ही रूप लगता है। इसी कारण उसकी शांति बनी रहती है।
>
> ध्यान में लीजिए, 'शांति' एक परिणाम है। विस्तार (व्यापकता) और गहराई (गंभीरता) का परिणाम है शांति। विश्व-प्रेम की भावना के कारण संत स्वभावतः शांत एवं प्रसन्न रहते हैं।

किसी से कुछ अपेक्षा रखना, किसी बात की आसक्ति होना, किसी विशेष व्यक्ति के लिए अतिरिक्त प्रेम होना – आदि सभी बातों से संत निर्लिप्त होते हैं। मानो वे हमसे कहते हैं – ''मैं तुम लोगों से मिलता हूँ, तुम्हारे साथ मिलजुल कर रहता हूँ, हँसता हूँ, बोलता हूँ, इसलिए मुझे तुममें से ही एक मत समझना। पानी में ही जन्मा, बढ़ा मोती पानी में गल नहीं जाता – यह बात मत भूलना।'' वैसे तो **संत सभी के होते हैं; परंतु फिर भी वे किसी के नहीं होते।** वायु सभी को स्पर्श करती है; परंतु किसी भी जाल में नहीं फँसती। कहीं भी नहीं रुकती। वह सभी की है; उसका कोई नहीं होता। इस प्रकार वे संग-विवर्जित होते हैं।''

संग याने सहवास! तो फिर कम से कम 'संत प्रेम' तो होना ही चाहिए न! कई बार मन में सत्संग की इच्छा होती है; परंतु सत्संग नहीं हो पाता। कुछ लोग प्रवचन सुनने के लिए आते हैं। वहाँ वे प्रवचनकार के सामने बैठे हुए भी दिखाई देते हैं; परंतु वास्तव में वे वहाँ होते ही नहीं हैं। 'मनुवा तो चहुँ दिशि फिरे।' उनका मन चारों दिशाओं में भटकता रहता है। अपना घर, किसी का लेना-देना, पत्नी, बाल-बच्चों से हुए झगड़े आदि सब अपने साथ लेकर ही आते हैं। कुछ लोग 'संत-वाणी' कार्यक्रम सुनने के लिए जाते हैं। वहाँ बहुत भीड़ होती है। उनके कानों में संतों की वाणी प्रवेश ही नहीं करती। वे सुनते रहते हैं रागदारी, स्वर-विलास, विविध आलाप! स्वरों का सहवास हो जाता है, संतों का नहीं। सत्संग

तिलक महाराज को एक बार शास्त्रीय संगीत की महफिल में ले जाया गया। किसी ने पूछा - कार्यक्रम कैसा लगा? उन्होंने कहा - मेरे कानों में सदैव गीता के श्लोक गूंजते रहते हैं। अतः मैं इधर ध्यान नहीं दे पाया।

स्वर-संग, ताल-संग, शब्द-संग के परे होता है। वहाँ तक कोई पहुँचता ही नहीं। 'संत-वाणी' कार्यक्रम में संतों की वाणी का आधार नाम-मात्र ही लिया जाता है। गायक व श्रोताओं का यह उद्देश्य ही नहीं होता कि संतों की वाणी जन-मानस तक पहुँचे, उनके हृदय में उतरे। संत-वाणी कार्यक्रम संगीत की महफिल होती है। वह बात बुरी है; ऐसा तो मैं नहीं कहना चाहता; परंतु इतना ही कहना है कि उससे संत सहवास नहीं होता।

श्रेष्ठों का सहवास महत्त्वपूर्ण है। ये श्रेष्ठ चित्ररूप में या मूर्तिरूप में हो तो भी चल सकता है। हम किस प्रकार के चित्र देखते हैं, घर में कौन से चित्र लगाते हैं, कौन सी मूर्तियाँ रखते हैं, घर की साज-सज्जा कैसी करते हैं, इस बात का भी महत्त्व होता है। यह भी 'संग' ही होता है। चित्रों, मूर्तियों का संग भी संवेदनाओं के तरंग निर्माण करता है। इसीलिए तुकाराम-महाराज कहते हैं – ''स्त्रियों का संग न हो नारायण। काष्ठ वा पाषाण मूर्ति का भी।'' स्त्री-मूर्ति लकड़ी की, पाषाण की या मिट्टी की हो तो भी उसका 'संग' न हो। हाँ, याने पुरुष-साधकों के लिए स्त्री-मूर्ति का संग न हो तो स्त्री-साधकों के लिए पुरुष-मूर्ति का संग न हो।

इसके माने ये है कि तुम्हारा मन कहीं फँसा न रहे। मन को कुछ न लिपटे। ऊपर से चढ़ाए हुए वस्त्र निकाल कर फेंके जा सकते हैं; परंतु कर्ण के कवच-कुण्डल उससे अलग नहीं थे। वे खींचकर निकालते समय वह भी छिल गया था। वैसे ही है जो चिपका हुआ, एकरूप हुआ होता है; उसे सहजता से अलग नहीं किया जा सकता। चिपक जाने पर, एकरूप होने पर वेदना होती है, दुःख होता है। पहने हुए कपड़े हमसे एकरूप नहीं हुए होते; इसी कारण उन्हें उतारने में हमें दुःख नहीं होता। परंतु किसी घाव पर मरहम-पट्टी की हुई हो, वह पट्टी खून के कारण चिपक गई हो, तो उसे निकालते समय बड़ी पीड़ा होती है। इसी कारण संत हमें बताते हैं; **'कुछ भी न चिपकने दो', संग ही न हो तो वेदना नहीं होगी।**

श्री गुरु का 'मौन' ही व्याख्यान

संतों को कुछ बताने के लिए बोलना ही पड़ता है, सो बात नहीं और संत सारा ज्ञान बोलकर शब्दों के माध्यम से ही देते हैं, ऐसा भी नहीं होता। संतों के शब्दों के समान ही उनका 'मौन' भी मुखर होता है। उनका स्पर्श भी बोलता है, उनकी दृष्टि भी बोलती है।

आलंदी में विसोबा रहते थे। सारे जीवन भर उन्होंने विठ्ठलपंत तथा उनके पुत्रों ज्ञानेश्वरादि से द्वेष ही किया था। परंतु आगे चलकर जब ज्ञानेश्वरजी की महिमा का भान हुआ, तो उन्हें बड़ा ही पश्चात्ताप हुआ। वे ज्ञानदेव जी से मिलने गए। पश्चात्ताप के कारण उनके मुँह से शब्द भी नहीं निकल रहे थे। गदगद् हो कर, हाथ जोड़कर, थरथर काँपते, बस खड़े ही रहे। ज्ञानदेवजी ने उनके हाथ पकड़े और कहा ''विसोबा चाचा, कुछ भी मत बोलिए, बोलने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। मैं सब कुछ समझ गया हूँ।'' संतों के साथ बिना शब्दों के भी संवाद किया जा सकता है।

नरेन्द्र बड़ी ही छानबीन करने वाला था। वह अपने मित्रों के साथ बातें कर रहा था। कह रहा था, ''वे रामकृष्ण मुँह में जो आए बकते हैं। कहते हैं, सब कुछ परमात्मा ही है। घोड़ा परमात्मा है, ताँगे वाला परमात्मा, उसका ताँगा भी परमात्मा, रास्ता भी परमात्मा –'' वे जोर-जोर से हँसने लगे। ''सब कुछ कितना हास्यास्पद है। तुम्हें भी ऐसा ही लगता है न!'' मित्रों ने सिर हिलाया। रामकृष्ण जी ने वह बात सुनी। बोले, नरेन्द्र इधर आओ। बेटे, तुम क्या कह रहे थे? नरेन्द्र निर्भीक था। उसने स्पष्ट रूप से बताया, ''आप जो कहते हैं, वह मैं नहीं मानता।''

श्री रामकृष्ण जी गुस्सा नहीं हुए। उन्होंने लंबा-चौड़ा भाषण नहीं दिया। नरेन्द्र को अपने पास बिठाया और उसके हृदय को स्पर्श किया। नरेन्द्र की स्थिति ऐसी हो गई जैसे उसे बिजली का करंट लग गया हो। उसी क्षण नरेन्द्र की समाधि लग गई। उसने 'अद्वैत' का अनुभव लिया। श्रीराम कृष्ण जी ने शब्दों के माध्यम से नहीं, स्पर्श से नरेन्द्र को ज्ञान दिया।

भगवान रमण महर्षि के संदर्भ में भी ऐसी ही एक घटना सुनी है। पॉल ब्रन्टन नाम का एक पत्रकार भारत

किसी महात्मा ने एक सेठ को प्रणाम किया और बोले – आपका त्याग बड़ा है। मैंने तो छोटे से संसार का त्याग किया, परन्तु आपने तो संसार के लिये परमात्मा का त्याग कर दिया।

में घूम रहा था। उनका मत यह था कि यहाँ कोई संत-वंत नहीं हैं, जो हैं वे जादूगर हैं। अनेक संदेह, प्रश्न लेकर वह रमण महर्षि के पास गया। रमण महर्षि ने उससे कुछ भी नहीं कहा; केवल उसकी ओर देखा। रमण महर्षि के बिना बोले ही पॉल ब्रन्टन के सारे संदेह दूर हो गए। यह सब अनाकलनीय है, तर्क के परे है। परंतु परमार्थ में ऐसा होता है।

दृष्टिमात्र से विष दूर करें। मनका सारा कल्मष चला गया। संतों का दृष्टिपात भी ज्ञान की वर्षा करता है। इसीलिए कहते हैं न – ''गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम् शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः।'' यह सच है। गुरु ने मौन धारण किया । उन्होंने कुछ नहीं कहा; परंतु शिष्य के मन के सारे संदेह दूर हो गए। संतों के सहवास में ऐसा चमत्कार हो सकता है।

> 'संत-वाणी' कार्यक्रम में संतों की वाणी का आधार नाम-मात्र ही लिया जाता है। गायक व श्रोताओं का यह उद्देश्य ही नहीं होता कि संतों की वाणी जन-मानस तक पहुँचे, उनके हृदय में उतरे। संत-वाणी कार्यक्रम संगीत की महफिल होती है। वह बात बुरी है ऐसा तो मैं नहीं कहना चाहता; परंतु इतना ही कहना है कि उससे संत सहवास नहीं होता।

अधिकस्य अधिकं फलम्!

योगवासिष्ठकार ने मोक्षमंदिर के चार द्वारपाल बताए हैं और कहा है कि कम से कम एक का तो परिचय कर लो। इसके माने ये हुए कि एक से अधिक का परिचय हो पाए तो वह अधिक फलदायी होगा, लाभकारी होगा। शम (और दम), संतोष, विवेक (विचार) और संत-सहवास (साधुसंगम।) – इस प्रकार चार द्वारपाल बताए हैं। ये चार द्वारपाल एक दूसरे से बहुत दूर-दूर नहीं हैं। वे एक-दूसरे से संबंधित हैं, जुड़े हुए हैं।

'शम' याने मन की शांति। मन की शांति एक बहुत बड़ी पारमार्थिक उपलब्धि है। पराकोटि के शांत मन को ही समाधि कहते हैं। यह शांति कब प्राप्त होती है? जब इंद्रियों की विषयों की ओर होने वाली दौड़ समाप्त हो जाती है। याने इंद्रिय-दमन, अर्थात् इंद्रियों का स्वाधीन होना महत्त्व की बात है। जिसकी इंद्रियाँ कुछ नहीं करती, उसकी प्रज्ञा हो गई स्थिर। जिसने इंद्रियों को जीत लिया, उसकी प्रज्ञा स्थिर हो गई। वह स्थित-प्रज्ञ बन गया। वह जाग्रति में भी समाधि का अनुभव लेता है। वह शांति अनुभव करता है। परंतु इंद्रियाँ स्वाधीन कब होंगी? वे जब 'संतुष्ट' होती हैं तभी स्वाधीन हो सकती हैं। तृप्ति याने इंद्रियों की स्वाधीनता। संतुष्ट, प्रसन्न व्यक्ति को 'मिला या न मिला' तो भी उसकी शांति नष्ट नहीं होती। वर्षा हो या न हो, सागर पूर्ण होता है। उसी तरह जो निरुपचार 'संतुष्ट' होता है, उसकी इंद्रियों की दौड़ भी रुक जाती है। 'संतोष' तो मन की ही एक वृत्ति है। वह बाहर से मिलने वाली, आनेवाली वस्तु नहीं है। वह है जीवन की और देखने का एक दृष्टिकोण। परंतु कौन 'संतुष्ट' रह सकता है? **जो विवेकी है, विचारशील है; वही 'संतुष्ट' रह सकता है।** जीवन की ओर देखने की यह 'संतृप्त दृष्टि' एकदम कैसे मिल सकती है? विवेक से, विचार से; उसका अभ्यास करना पड़ता है। एकान्त में मन को यह शिक्षा देनी पड़ती है। संतुष्ट मन विवेक, विचार की देन है। यह विवेक संतों के सहवास में जाग उठता है। **'साधु संगम' प्राप्त होने पर मन को विवेक मार्ग सूझने लगता है।** संतों का सहवास विवेक जाग्रत करता है। संतों के सहवास में यह ध्यान में आता है कि पारमार्थिक जीवन की अनुभूति कैसे ली जाए? यह संत-विचार यानि विवेक! **विवेक से मन की संतुष्टता, संतुष्ट मन से इंद्रियों की तृप्ति, इंद्रिय-तृप्ति से शांति!** – इस प्रकार से द्वारपाल हाथ में हाथ लिए खड़े हैं। किसी का भी हाथ पकड़ लिया तो अन्यों को भी अपनी ओर खींचा जा सकता है।

❖❖❖

एक व्यक्ति घर छोड़ना चाहता था। स्वामीजी ने कहा - घर नहीं छोड़ना है, ममता और अपना अधिकार छोड़ दो। परिस्थिति को नहीं स्वयं को बदलो।

अंतर्राष्ट्रीय वेद परिषद

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान रजत महोत्सव की बेला में

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना ठीक पचीस वर्ष पूर्व २१ फरवरी १९९० इस दिन हुई। भारतीय तिथि के अनुसार वह दिन मार्गकृष्ण एकादशी याने विजया एकादशी का था। संस्थाओं के इतिहास में पच्चीस वर्ष पूर्ण होना यह रजत जयंती महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ने ताम–झाम के खर्चिले कार्यक्रमों का आयोजन न करते हुए इसे केवल रचनात्मक रूप में मनाने का निश्चय किया। इसके **प्रथम चरण** के रूप में स्थापना सप्ताह के अंतर्गत किसी भी एक दिन प्रतिष्ठान के २४ वेदविद्यालयों में एक दिवसीय हवन तथा स्थानिक लोगों के सम्मेलन की योजना बनी, जिसकी यथास्थान कार्यवाही हुई। **द्वितीय चरण** के रूप में प्रतिष्ठान के मुख्य केंद्र आलंदी के विद्यालय में तीन छात्रों का शुक्ल यजुर्वेद की माध्यंदिन शाखा का घनपारायण संपन्न हुआ। जिसका विस्तार से वर्णन पिछले अंक में तथा इस अंक में भी अन्यत्र पठनीय है। घनपारायण का यह कार्य और उसके समापन का समारोह आलंदी के धार्मिक इतिहास में अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय कार्य रहा है। सारे कार्य भारतीय तिथि को ध्यान में रखकर संपन्न हुए।

प्रतिष्ठान के रजत जयंती उत्सव का **तीसरा चरण** देश की राजधानी दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय वैदिक परिषद (International Vedic Conference) के रूपमें संपन्न हुआ। इस का आयोजन देश की राजधानी दिल्ली में दि. २० से २२ फरवरी इन तीन दिनों में हुआ। संयोजक रहे – Foundation for Vedic India और महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान! Foundation for Vedic India यह संस्था स्व. स्वनामधन्य **महर्षि महेश योगी** के पश्चिमी शिष्योंने निर्माण की है। विश्वविख्यात महर्षि महेश योगी जी ने गत लगभग आधे शतक तक विदेशों में जो कार्य वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धार के लिये किया वह अविस्मरणीय है। सारे संसार में वेदोंकी महत्ता प्रचारित करना, वैदिक ज्ञान–विज्ञान का गहरा अनुसंधान करके मानव जीवन के लिये असंख्य उपयोगी गूढ रहस्य खोज निकालना, आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग–प्रयोग से वैदिक ज्ञान की प्रामाणिकता प्रमाणित करना, सहस्रावधि छात्र वेदअध्ययन कर सकें इतने बडे अनेक वेदविद्यालय निर्माण करना, वैदिक पंडितों को अनेक प्रकारका सहयोग देकर वेदविद्या को प्रोत्साहित करना तथा अमेरिका में वैदिक ग्राम बसाना ऐसे पू. महर्षिजी के द्वारा किये गये असंख्य कार्यों के कारण विश्व के धरातल पर वेदविद्या पुन: सुप्रतिष्ठित हुई है। वैदिक ज्ञान के बारे में विलक्षण जिज्ञासा विश्व के विद्वानों में जगी है तथा उसके कारण भारतीय वैदिक जगत् का भी आत्मविश्वास बहुत बढा है।

पू. महर्षिजी के समर्पित विदेशी शिष्योंने Foundation for Vedic India का निर्माण किया। उन सभी की यह प्रामाणिक धारणा है कि विश्व के उत्थान में देवभूमि–पुण्यभूमि भारत की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है तथा भारत के सशक्तीकरण के लिये यहाँ वेदों की पुन:स्थापना अनिवार्य है। शुद्ध आचरण सहित वेदों का विशुद्ध उच्चारण–घोष जितनी बडी मात्रा में होगा उतना यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं सात्त्विक होकर इस धरातल पर दैवी शक्तियोंका अवतरण होगा। उससे लोगों की मानसिकता में परिवर्तन होकर स्थान स्थान पर धार्मिक उत्थान के अनेक कार्य अपने आप स्वयंप्रेरणा से आरंभ होकर अनवरत रूप से चलेंगे, और अंतत: इन समस्त शक्तियों के एकत्रित परिणाम स्वरूप भारत का सर्वाधिक उत्थान होकर विश्व की भी समस्याओंका समाधान करने में भारत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा।

उपरोक्त कार्य की दृष्टि से Foundation for Vedic India को भारत की भूमिपर एक आंतर–राष्ट्रीय परिषद

आयोजित करना आवश्यक लगा। उन्हे यह भी लगा कि यह आयोजन किसी भारतीय वैदिक संस्थाके साथ मिलकर किया जाय। उन्हें ऐसी संस्था आवश्यक थी जो केवल वेदविद्या के लिये दीर्घकाल से प्रभावी ढंग से ठोस कार्य कर रही हो। संपूर्ण भारत की अनेक संस्थाओंका निरीक्षण एवं अध्ययन करनके पश्चात् उन्हे 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' ही इस कार्य–सहभागिता के लिये उपयुक्त प्रतीत हुआ और यह आयोजन Foundation for Vedic India एवं 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' का संयुक्त आयोजन हो ऐसी योजना बनी। हमें हर्ष है कि प्रतिष्ठान के पच्चीसवे वर्ष में अपने कार्य का ऐसा मूल्यांकन एक अत्यंत महती वैश्विक संस्था के द्वारा हुआ। विशेष आनंद की बात यह भी थी कि ईसवीय दिनांकानुसार ठीक **२१ फरवरी २०१५ को प्रतिष्ठान जब अपने पचीस वर्ष पूर्ण कर रहा था उसी दिन** को मध्य में लेकर यह आयोजन निश्चित किया गया तथा आनंदपूर्वक संपन्न भी हुआ। यह केवल श्री ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से ही संभव हुआ।

प्रतिष्ठान के रजत जयंती वर्ष की पूर्णता के अवसर पर इस परिषद का आयोजन २० से २२ फरवरी २०१५ की कालावधि में द ग्रँड हॉटेल, वसंत कुंज, नई दिल्ली के भव्य सभागार में संपन्न हुआ। इसका नाम था International Conference to Re-establish Vedic India. इस के शुभारंभ का मंगलदीप **ज्योतिष्पीठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य पू. स्वामी श्री वासुदेवानंद सरस्वती जी** के मंगल हाथों प्रज्ज्वलित हुआ। विशेष अनुग्रह यह था कि पू. श्री. शंकराचार्यजी महाराज उद्घाटन से समापन सत्र तक तीनों दिन पूरे समय व्यासपीठ पर विराजमान रहे।

प्रथम दिन :– Prof. Tony Nader, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, Dr. Bevan Morris, Dr. Hagelin, स्वामी अमृत स्वरूपानंद, डॉ. विजय भटकर, Dr. Neil Paterson, Dr. Michael Dillbeck, डॉ. सुब्रह्मण्य स्वामी तथा Dr. Susie Dillbeck इन विख्यात वक्ताओंने वेदों के गूढ रहस्यों को वैज्ञानिक शैली में प्रस्तुत किया।

द्वितीय दिन :– प्रतिष्ठान का २५ वा वर्धापन दिन रहा। प्रतिष्ठान के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी गोविंददेव गिरि जी के द्वारा इस जानकारी के प्रदान करते ही भवन अभिनंदन की तालियों से गूंज उठा। स्वामीजीने कहा कि ब्र. महर्षि महेश योगीजी का यह शुभाशीर्वाद रजत जयंती के मुहूर्त पर मिल रहा है और सूक्ष्म रूप से उपस्थित रहकर महर्षिजी ही इस परिषद का संचालन कर रहे हैं। डॉ. जी. माधवन नायर, डॉ. सरोज बाला, Dr. John Hagelin, Dr. Susie Dillbeck, स्वा. परमात्मानंदजी, स्वा. विश्वेश्वरानंदजी, Dr. Bevan Morris, Dr. Keith Wallace, स्वा. माधवप्रियदासजी, Dr. Robert Schneider, डॉ. प्रमोद भटनागर, Prof. Tony Nader, Dr. John Fagan, Joachim Alberto Chissano Rama, प्रो. संन्निधानम् सुदर्शन शर्मा, Dr. John Fagan, तथा Dr. John Konhaus आदि विद्वान एवं वैज्ञानिक वक्ताओंने श्रोतृवृंद को वैदिक विज्ञान की महत्ता से अभिभूत कर दिया।

तृतीय दिन :– परिषद के समापन का दिवस था। परिषद के दो दिनों के व्याख्यानों के कारण श्रोताओं में वेदों के प्रति विलक्षण निष्ठा और विश्वसनीयता तथा मानवजीवन के विविध अंगों के लिये उपयोगिता की जागृत कर दी थी इसलिये आज श्रोतृसंख्या भी सर्वाधिक थी तथा उत्सुकता भी। Dr. Jose Luis Alvares Roset, Father Gabriel Mejia, स्वामी निर्मलानंदनाथजी, Colonel Brain Rees, Dr. Cathy Gorini के साथ साथ आज विख्यात योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज ने भी वेदनिष्ठा की धूम मचादी। Dr. Howard Chancellor, Dr. Fred Travis, Dr. Eike Hartmann, म.म. साधु भद्रेशदासजी, Dr. Neil Paterson, Dr. Bevan Morris, Dr. Christophor Crowell, डॉ. हर्षवर्धन (मंत्री महोदय – विज्ञान एवं तकनीकी), Dr. Harris Kalpan तथा स्वामी ब्रह्मदेवजी के उद्बोधन होकर धन्यवाद प्रस्ताव एवं पू. शंकराचार्यजी महाराज के आशीर्वचन से यह त्रिदिवसीय आंतरराष्ट्रीय परिषद पूर्ण हुई।

पृष्ठ क्र. २९ पर

मानसिक संतुलन ही योग है!

लोगों की ओर देखने के बजाय हम अपने ही चित्त की ओर देखें। और जिस समय हमें ऐसा लगता है कि मेरे चित्त का संतुलन जा रहा है, हमें अपने मस्तिष्क का पुनर्योजन करना चाहिए। मस्तिष्क की विचार धारा को बदल देना चाहिए और यदि इस कला को हम सीख जायेंगे तो 'योगी' हो जायेंगे। भगवद्गीता में योगासन करने को योग नहीं कहा, प्राणायाम करने को योग नहीं कहा, चित्त के संतुलन को बनाए रखने की कला को योग कहा है।

भगवद्गीता का सार केवल दो बातों में आ जाता है। उसमें पहली बात यह है – चाहें जो भी हो जाये, मैं अपने कर्तव्य का त्याग नहीं करुँगा। मेरा कर्तव्य मुझे करना ही है। यह इच्छा भगवान् की नहीं कि अर्जुन युद्ध करे, लेकिन यदि युद्ध करना अर्जुन का कर्तव्य है; तो अर्जुन को युद्ध करना ही चाहिए। भगवान् ने अर्जुन को युद्ध करने के लिए कहा और इसलिए मैं भी उठकर युद्ध ही करने लग जाऊँ, तो स्पष्ट है मैंने भगवद्गीता को समझा नहीं। भगवान् ने युद्ध शब्द का प्रयोग वहाँ पर किया; क्योंकि युद्ध अर्जुन के कर्तव्य में आता है। भगवद्गीता में भगवान् निरन्तर कर्तव्य की ओर हमें उन्मुख करते हैं। चाहे कुछ भी हो जाये, अपने कर्तव्य का त्याग नहीं करो। दूसरी बात कर्तव्य करते समय भी मन का संतुलन बना रहे। ये दो बातें आ जायें; तो पूरी गीता जीवन में आ जाती है।

भगवद्गीता को योग शब्द बड़ा प्रिय है। पूरी गीता को ही भगवान् ने 'योगशास्त्र' कहा है। भगवद्गीता के हर अध्याय के अन्त में पुष्पिका आती है और उस पुष्पिका में भगवद्गीता के संबंधित अध्याय का नाम दिया हुआ होता है। पहले अध्याय का नाम 'अर्जुनविषादयोग' है, दूसरे अध्याय का नाम 'सांख्ययोग' है, तीसरे अध्याय का नाम 'कर्मयोग' है। इस प्रकार नाम बदलते जाते हैं, लेकिन सभी नामों में योग शब्द आता है। तो भगवद्गीता एक योगशास्त्र है और विभिन्न प्रकार के योगों का भगवद्गीता ने उपदेश किया है। इन सभी योगों का मूल आधार कौनसा योग है? तो भगवद्गीताकार स्वयं कहते हैं –

''समत्वं योग उच्यते''

समत्व का अर्थ है 'संतुलन'। मैं मेरा संतुलन खोऊँगा नहीं। और यदि अपने संतुलन को न खोने की कला सीख जायें तो अपने आप जीवन में योग आ जाएगा। श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने बड़े सुन्दर शब्दों में कहा–

अर्जुना समत्व चित्ताचें। तेंचि सार जाण योगाचें।
जेथे मन आणि बुद्धीचें। ऐक्य आथी।। (१–७३)

चित्त का समत्व ही योग का सार है। संतुलन को हम क्यों खो देते हैं। समझो, हमें कहीं सम्मान मिलता है और मैं बहुत बड़ा हूँ, ऐसा अहंकार आ जाता है, तो संतुलन गया। कहीं एकाध बार अपयश पाता हूँ, तुरन्त मेरा संतुलन टूट जाता है, 'मैं तो जीवन में कुछ नहीं कर पाऊँगा'।

एक बहरा व्यक्ति नित्य कथा में सम्मिलित होता था। पूछने पर बोला - मैं सुन नहीं सकता, पर मुझे वहाँ के वातावरण का लाभ तो मिलता है। फिर मेरे परिवार वाले मेरे आचरण से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

अतः निराशा आ जाती है। कहीं सुख आया तो सुख में बह गया, दुःख आया तो रोने लग गया। इसलिए भगवान् कहते हैं – ये सुख, दुःख, मान, अपमान, हानि या लाभ, अर्जुन! यह चलता रहेगा, तुम अपने चित्त को सभी अवस्थाओं में संतुलित रखना...

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ;
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

(२-३८)

चाहे सुख आ जाये, या दुःख आ जाये, चाहे मान-अपमान लाभ हो या हानि, मेरे चित्त का संतुलन बना रहे। इस प्रकार की साधना का उपदेश हमें भगवद्गीता से मिलता है।

जीवन एक खेल है

आप लोगों को क्रिकेट का खेल पता ही होगा। खेले नहीं होंगे तो भी छोटे पर्दे पर तो देखा ही होगा। मैंने बचपन में एक कविता पढ़ी थी – 'जीवन भी एक क्रिकेट का खेल है।' Life is a game of cricket, An earnest noble game जीवन को क्रिक्रेट का खेल कैसे कहा? क्रिक्रेट में क्या होता है? एक बल्लेबाज होता है। उसके हाथ में एक बल्ला होता है। सामने से कोई गेंद फेंकता है। और उस बल्लेबाज को अपने बल्ले से उस गेंद को दूर हटाना होता है। उसको यह चिन्ता होती है कि कहीं विकिट उड़ नहीं जाये। और यदि विकिट को धक्का लग गया और उसका संतुलन चला गया; तो वह बाहर हो गया। इसलिए बल्लेबाज उस बल्ले को लेकर खड़ा होता है और गेंद को विकिट की ओर नहीं जाने देता, इसी दृष्टि से हमारा जीवन भी 'क्रिकेट' है। हमारे जीवन में विकिट हैं, हमारे चित्त के संतुलन का बिगड़ना दुःख की गेंद आकर चित्त के संतुलन को बिगाड़ता है। हम लोगों का कर्त्तव्य क्या है? ऐसी गेंदें तो आती ही रहेंगी। हम लोगों को हाथ में एक बल्ला रखना चाहिए, और इसी बल्ले का नाम है **विवेक**। विवेक के बल्ले को अपने साथ रखते हुए, अनासक्ति की 'बैट' को अपने हाथ में रखते हुए, आनेवाले सुख-दुःखों की, मान-अपमान की, हानि-लाभ की गेंदों को हम उड़ाते रहें और चित्त के संतुलन को, विकिट को, बचाते रहें, इसी का नाम 'योग' है। यही हमारा जीवन है।

अब भगवान् का यहाँ पर उपदेश क्या है? क्रिक्रेट का खेल चल रहा हो और किसी ने कह दिया कि ''भई, 'मार्शल' आ रहे हैं, मैं नहीं खेलता हूँ, मुझे डर लगता है'' तो नहीं चलेगा। अर्जुन भी यही कहता है। वह कहता है कि 'मैं जा रहा हूँ, मैदान छोड़कर जा रहा हूँ।' भगवान् ने कहा – ''मैं तुम्हें बल्ला छोड़कर जाने नहीं दूँगा, तुम जीतते हो या हारते हो, इससे कोई बात बनती-बिगड़ती नहीं। लेकिन तुम बल्ला छोड़कर जा रहे हो, खेल के मैदान से भाग रहे हो यह मैं तुम्हे करने नहीं दूँगा। Be bowled out or caught out but never throw down the bat तुम 'क्लीन बोल्ड' हो जाओ कोई बात नहीं। तुम्हारा 'कैच' चला जाये और तुम 'आउट' हो जाओ, कोई बात नहीं, लेकिन तुम खेलते रहो। 'बैट' तुम्हारे हाथ में होनी चाहिए।'' उसी प्रकार चाहे जो भी हो जाये मैं अपने जीवन में कर्तव्य के मैदान में डटा रहूँ। जब तक हूँ, अपने कर्तव्य का पालन करता रहूँ। यदि यह काम मेरा है तो मुझे करना ही चाहिए। इस प्रकार की भावना मेरे अन्तर्मन में निरन्तर जाग्रत होनी चाहिए। यदि ऐसा होगा; तो फिर भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं, तुम 'आउट' भी हो गये; तो भी तुम जीत गये। लेकिन यदि तुमने बल्ला फेंक दिया; तो तुम उसी समय हार गये। कर्तव्य का त्याग करते ही मनुष्य भगवान् की दृष्टि में गिर जाता है। और यदि कर्तव्य का पालन करता रहा और उसकी हार हुई; तो भी भगवान् कहते हैं कि तुम्हारा अपयश भविष्य में यश प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सिद्ध करुँगा। तुम हँसते हुए मनोधैर्य से खेलते रहो, यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। हम जीवन की ओर किस दृष्टिकोण से देखते हैं, हमारी मनोवृत्ति क्या है? हमारा यह दृष्टिकोण एक मात्र ऐसी बात है जिसका विचार भगवान् पग-पग पर

ब्रह्माजी ने कर्मों का फल देने के लिये 'आह' को भेजा। तब लोग उससे डर गये, वह वापिस लौट आई। ब्रह्मा जी ने उसके मुख पर 'च' की चादर डाल दी। जीव इस 'चाह' में फँसकर ''आह-आह'' करने लगे।

करते हैं। इसलिए भगवान् ने यश को इतना महत्त्व नहीं दिया, जितना कर्तव्य को।

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।(२-३८)

भगवान यहाँ पर दो शब्दों का प्रयोग करते हैं – 'जय' और 'अजय'। तुम पराजित हो जाओ कोई बात नहीं, लेकिन तुम भाग जाओ, हो सकता यह कदापि नहीं तुम्हें मैं भागने नहीं दूँगा। यदि आप अपने कर्तव्य पर डटे रहते हैं और अपने मन का संतुलन कायम रखते हैं; तो आप एक बात जीवन में देखेंगे कि आप जहाँ भी जायेंगे यश के द्वार आपके लिए खुलते रहेंगे क्योंकि यह बहुत बड़ा विज्ञान है। कर्तव्य के लिए जब हम निश्चय के साथ खड़े हो जाते हैं, तो बाधाएँ अपने-आप दूर हो जाती हैं।

स्वामी विवेकानन्दजी के जीवन की एक घटना है – एक बार वे एक पर्वत से जा रहे थे। एकाएक सामने से एक शेर आया। भागने को भी स्थान नहीं था। वे सोचते रहे कि मैं करूँ तो क्या करूँ? अब इधर खाई है, उधर पर्वत है और खाई में कूदना कठिन है पर्वत पर चढ़ना भी कठिन है। पीछे भाग जाऊँ तो शेर मेरा पीछा करके मुझे समाप्त कर सकता है। क्या करें? स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा, 'और कोई उपाय नहीं है, यह देखकर मैं वहीं पर बैठ गया। शान्ति के साथ भगवान् का मैंने स्मरण किया। शेर मेरे पास आया और मेरे ऊपर से कूदकर अपने मार्ग से चला गया।'' जीवन में कठिन परिस्थितियाँ आने पर भागना नहीं है। जो जीवन में रणांगन छोड़कर दूर नहीं जाता है, उसे सफलता अपने आप प्राप्त होती है। परिस्थिति पर विजय प्राप्त करने का मार्ग अपने आप मिल जाता है और एक दिन संसार आपको सफल घोषित करता है। इसलिए हम अपने कर्तव्य का त्याग न करें और कभी कर्तव्य का अहंकार भी न करें। ऐसा करने से ही जीवन एक आनन्द-यात्रा बन सकती है। जीवन में बोझ नहीं रहता है। जब मैं अपने कर्तव्य का पालन करता हूँ और संतुलन खोता नहीं हूँ, तो मुझसे किसी को दुःख भी नहीं पहुँचता।

मानसिक संतुलन ही योग

लोगों की ओर देखने के बजाय हम अपने ही चित्त की ओर देखें। और जिस समय हमें ऐसा लगता है कि मेरे चित्त का संतुलन जा रहा है, हमें अपने मस्तिष्क का पुनर्योजन करना चाहिए। मस्तिष्क की विचार धारा को बदल देना चाहिए और यदि इस कला को हम सीख जायेंगे तो 'योगी' हो जायेंगे। भगवद्गीता में योगासन करने को योग नहीं कहा, प्राणायाम करने को योग नहीं कहा, चित्त के संतुलन को बनाए रखने की कला को योग कहा है। इसलिए ईश्वर भक्ति के साथ-साथ भगवद्गीता का चिन्तन हमारे मन में चलता रहे, तो अपने व्यवसाय का कार्य अथवा समाज सेवा का कार्य,ये सभी कार्य हमारे लिए बोझ नहीं रह जाते। ये सब कार्य करते हुए भी हम हँसते रहते हैं, मुस्कुराते रहते हैं। क्या यह सम्भव है? अवश्यमेव सम्भव है। लेकिन उसके लिए पहले हम लोगों को कुछ प्रशिक्षण लेना चाहिए। इतने सारे काम करके भी चित्त का संतुलन कैसे रखा जा सकता है, इसकी शिक्षा आवश्यक है।

आप लोग साईकल चलाते होंगे। जब आरम्भ में साईकल चलाना सीखते हैं तब हैंडल और पेडल का संतुलन रखना कठिन होता है और हम गिर जाते हैं। लेकिन वही व्यक्ति जब एक बार उस कला को सीख लेता है कि साईकल को कैसे चलाया जाय- उसके पश्चात् तो क्या कहे! वह साईकिल चलाता नहीं हैं, कभी एक हाथ छोड़कर चलाता है, कभी दोनों हाथ छोड़कर चलाता है। पुणे में तो एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर चलाते है और कोई गाड़ी जा रही हो तो, गाड़ी को पकड़कर भी कई लोग चलाते हैं। पेडल मारना ही नहीं पड़ता – अपने आप चलती है साईकल, और चलाने वाला उससे आनन्द लेता है। लेकिन यही व्यक्ति जब आरम्भ में सीख रहा था, तब क्या हो रहा था? कभी नीचे ध्यान

जाता था तो कभी ऊपर नीचे नहीं जाता था। तो जिस प्रकार साईकल चलाना उसके लिए अब सरल हो गया उसी प्रकार हमारे चित्त का संतुलन रखना भी हमारे लिए बड़ा सरल हो सकता है। केवल हम लोगों को जरा सा सीख लेना चाहिए। हम लोगों को समझ लेना चाहिए। भगवद्गीता में इसके उपाय हम लोगों को प्राप्त होते हैं। तो भगवद्गीता को अपने किसी एक कार्य के लिए नहीं, पूरे जीवन के लिए अपनाइगा। विनोबाजी का वाक्य मुझे याद आता है –

गीताई माउली माझी। तिचा मी बाळ नेणता।
पडता रडता घेई, उचलूनी कडेवरी।।

जिस प्रकार एक माता बालक को उठा लेती है और रोता हुआ बालक जब माता की गोद में बैठता है तो शान्त हो जाता है; क्योंकि माँ को पता है उसका मन कैसे बदला जाये, कैसे उसे लड्डू खिलाया जाये, कैसे उसे गुड़िया दिखायी जाये और फिर वह उसको हँसा देती है। उसी प्रकार भगवद्गीता को माता की तरह मान कर जब हम उसकी उपासना करेंगे, तो अपने आप इस प्रकार आनन्दमय जीवन जीने की एक सुन्दर–दिव्य दृष्टि हम लोगों को प्राप्त हो जायेगी।

अधिक मासमें - चलो आलंदी

स्नेह निमंत्रण

* कार्यक्रम *

दि. २६.०६.२०१५ से ०२.०७.२०१५ तक

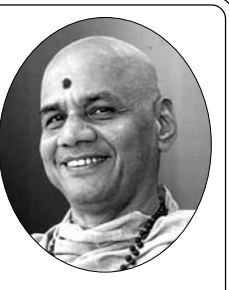

प्रथम सत्र
प्रातः ९.०० से ११.३०
ज्ञानेश्वरी प्रवचन (मराठी में)
हरिभक्ति परायण
श्री. चैतन्य महाराज देगलूरकर

द्वितीय सत्र
दोपहर ३.३० से ६.३०
ज्ञानेश्वरी भावकथा (हिंदी में)
प. पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज

रात्रौ ८.०० बजे
वारकरी कीर्तन सेवा

* कार्यक्रम स्थल *

फ्रूटवाले धर्मशाला,
प्रदक्षिणा रोड, आलंदी
–: आयोजक :–
श्री. श्रीराम परतानी– ९३२५४०२५४२
श्री. गणेश सारडा – ९३७१०३१४५८

विशेष ज्ञातव्य।

भाविकों के लिए पूर्वसूचना प्राप्त होनेपर आवश्यकतानुसार निःशुल्क निवास–व्यवस्था भी की जाएगी।

सभी उपस्थित भाविकों के लिए दोपहर तथा रात को निःशुल्क भोजन – प्रसाद व्यवस्था की गयी है।

–: संपर्क :–
धर्मश्री कार्यालय – ०२०–२५६५२५८९

एक अनूठा एहसास ... कि 'वो' है मेरे पास

असहाय अवस्था में;
दुविधाग्रस्त दशा में,
मैं चल पड़ा –
एक ऐसी राह पर;
जहाँ सब कुछ धुंधला–धुंधला था,
राह भी और मंजिल भी।
फिर भी एक धुन थी;
सो एक भटके राही की तरह
चलता रहा, चलता ही रहा।

एक पड़ाव पर आकर देखा–
आजू–बाजू और पीछे भी देखा
आश्चर्य! भयंकर आश्चर्य!!
मंजिल का तो दूर–दूर तक पता नहीं,
भ्रमित भी था; आशंकित और
भयभीत भी
पर, क्या कर सकता था?
न हटने–भागने का मन
और न चलने का जोश।

छोड़ दिया सब कुछ;
उसी पर, जिसके लिए चला था।
चाल ढीली थी, थकान भी थी,
फिर भी, जैसे–तैसे चलता रहा;
चलता ही रहा।

जाने–अनजाने,
प्रभु की कृपा–वृष्टि होती रही;
बदन भीगता रहा, आँखें रोती रहीं
कभी भीगने से डरता;
कभी हौंसले पस्त होते
फिर भी कोई चुंबक खीचता रहा
और मैं चलता रहा, चलता ही रहा।

मेरे साथ–साथ
'काल' की कटार भी चलती रही;
उम्र को काटती रही,
अभी भी; प्रतिक्षण काट रही है।
मैंने भी पूरे उत्साह के साथ चलना
नही छोड़ा, चलता जा रहा हूँ। .....

जो बीज एक बोया था;
अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित हुआ।
अब फल भी लगने लगे हैं।
फल ज्यों–ज्यों पकता जा रहा है,
उसकी सुवास अन्तस्तल तक
पहुँच रही है।

उसी सुवास के साथ
एक सुरम्य प्रकाश
किरणों के रूप में आया,
अंधेरा तिरोहित होने लगा
मंजिल कुछ ही दूर होने का
एहसास; जब जागा, तो
मैं अचानक पछताया;
यह सोच कर कि
मैं मंथर गति से क्यों चला?
रास्ता सही था; मंजिल भी स्पष्ट
थी, थोड़ी 'गति' और बढ़ा लेता;
तो जहाँ आज हूँ,
वहाँ कल ही पहुँच गया होता।

अब क्या हो सकता है?
जो होना था; सो तो हो गया।
अब तो एक मधुर, सुवासित एहसास
जरूर साथ है कि
'मैं' भी 'अपने' साथ हूँ
और 'वो' भी मेरे साथ है।

ऐसा सोचने पर
अब किसी भी प्रकार का
भय नहीं लगता; क्योंकि
'आज' भी तो मेरे पास है।
'कल' की और 'काल' की किसे पड़ी है?
'महाकाल' की उपस्थिति का
एहसास अब मेरे पास है।

अतीत की ठोकरें;
नहीं, नहीं, अनुभव,
हर घड़ी, हर पल,
'उसके' सुमिरन का प्रबल पुरुषार्थ–
ये मिल कर, अन्तःकरण के आँगन में
एक देदीप्यमान सूरज उतारेंगे,
तभी तो; इस आशा से उत्साहित
मैं चलता जा रहा हूँ,
चलता ही जा रहा हूँ।

चल रहा हूँ; उस पथ पर;
जिसका अंतिम छोर वहाँ है
जहाँ 'वह' है; केवल वही;
जिसकी तलाश में
चलते तो अनेक हैं;
पर पहुँचते विरले ही हैं।
मैं भी चल रहा हूँ, चलता ही जा रहा हूँ।
उस, सुखद एहसास के साथ।

–एस.एन. सरोज, अजमेर

निवृत्त शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, प.पू. गुरुदेव स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराजानां
करसरोरुहयो: महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – गीता परिवार द्वारा सविनयं समर्प्यमाणम्

पद्मभूषण - पंचकम्

सद्भाग्यवैभवमद्य भारतसर्वकारस्यैव हि। श्री-सत्यमित्रानंद-गिरि-सम्मान कार्यं साधितम् ।
पद्मवत्तेऽतिप्रसन्ना पद्मपुष्पैरर्चिता। पद्मभूषण-भूषणं श्री सद्गुरुं प्रणता वयम् ।। १ ।।

यह वास्तव में भारत सरकार का ही सद्भाग्य है कि उसने प.पू. गुरुस्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज को सम्मानित करने का अवसर साध लिया। पू. महाराजश्री कमलपुष्प के समान ही सदैव प्रसन्नता से खिले रहते हैं। आज पद्म-पुरस्कार-रूप पुष्प से उनकी पूजा हुई। वास्तव में पू. महाराजश्री ने ही पद्मभूषण पुरस्कार को आज विभूषित कर दिया है। ऐसे हमारे श्री सद्गुरु देव के चरणों में हम वंदन करते हैं।

श्री सत्यमित्रानंदगुरव: केवलं न सभाजिता । स्वामिवर्याऽपर-विवेकानंदरूपेणार्चिता ।
जयतु नितरां जगति सततं भारतीय-परम्परा। पद्मभूषण-भूषणं श्री सद्गुरुं प्रणता वयम् ।। २ ।।

इस पुरस्कार से पू. स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज का केवल सम्मान नहीं हुआ है तो अपर स्वामी विवेकानंद के रूप में उनका पूजन हुआ है। ऐसे महापुरुषों की हमारी भारतीय परंपरा संसार में सर्वत्र विजयी हो। पद्मभूषण पुरस्कार को विभूषित करनेवाले हमारे पूज्य सद्गुरु देव को पुन: पुन: हम नमन करते हैं।

अति-भव्य-भारतमातृमंदिर-स्थापकोऽद्य पुरस्कृत:। श्री-रामनाम-सुलीन-मानस-तापसोऽद्य सुपूजित:।
गंगौघतुल्याऽस्खलित-वाक्पतिरद्य भो सम्मानित:। पद्मभूषण-भूषणं श्री सद्गुरुं प्रणता वयम् ।। ३ ।।

अत्यंत भव्य अद्वितीय भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) के निर्माता को आज यह पुरस्कार मिला है। जिनका मन सर्वदा राम नाम में लीन रहता है, ऐसे तपस्वी का आज पूजन हुआ है। गंगाजी के प्रवाह सदृश अस्खलित वक्ता का आज सम्मान हुआ है। पद्मभूषण पुरस्कार को विभूषित करनेवाले ऐसे सद्गुरु देव को बारंबार प्रणाम।

दर्शनीया वन्दनीया पूजनीया भो इमे। श्रोतृभिश्चास्वादनीयाश्चिन्तनीया भो इमे।
जगति संस्मरणीय-चरणा पावमाना भो इमे। पद्मभूषण-भूषणं श्री सद्गुरुं प्रणता वयम् ।। ४ ।।

अजी! सारे विश्व में यदि कोई सर्वाधिक दर्शनीय, वंदनीय, पूजनीय हैं तो हमारे श्री गुरुदेव। श्रोताओं के द्वारा यदि आस्वादनीय एवं चिंतनीय हैं तो हमारे श्री गुरुदेव। नित्य स्मरणीय एवं पावन करनेवाले हैं तो हमारे गुरुदेव। ऐसे पद्मभूषण पुरस्कार को भी विभूषित करनेवाले श्री गुरुदेव के चरणकमलों में पुन: पुन: प्रणाम।

यक्ष-चारण-सिद्ध-गंधर्वादि देवगणा दिवि। गायन्ति महिमानं तथा विकिरन्ति पुष्पाण्यपि भुवि।
शिष्यसंघा बहु मिलित्वा नन्दयन्ति परस्परम्। पद्मभूषण-भूषणं श्री सद्गुरुं प्रणता वयम् ।। ५ ।।

नभोमंडल में आज यक्ष, चारण, सिद्ध, गंधर्व तथा देवगण आदि श्री गुरुदेव की महिमा का गान कर रहे हैं। तथा भूमंडलपर पुष्पांजलियाँ भी विखेर रहे हैं। स्थान स्थान के शिष्यसमूह आनंदित हो परस्पर आनंद बढाते हुए उत्सव मना रहे हैं। ऐसे पद्मभूषण पुरस्कार को विभूषित करनेवाले श्री गुरुदेव के चरणों में विनम्र अभिवादन है।

श्री सद्गुरु देव की जय हो! जय हो!! जय हो!!!

इति श्री ज्ञानेश्वरपदाश्रित-स्वामिगोविंददेवगिरि-विरचितं पद्मभूषण-पंचकम् सम्पूर्णम्।

श्री सद्गुरु-चरणारविन्दार्पणमस्तु ।

अधिकमास

लोकव्यवहार में इस मासको अधिकमास, मलमास इत्यादि भी कहते हैं। इस वर्ष आषाढ मास में (दिनांक १७ जून २०१५ ई. से १६ जुलाई २०१५ ई. तक) पुरुषोत्तम है। इस मास में ईश्वरके उद्देश्यसे जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किये जाते हैं, उनका अक्षय फल होता है। यदि सामर्थ्य न हो तो ब्राह्मण और साधुओं इत्यादि की सेवा सर्वोत्तम है। इससे तीर्थ–स्नानादिके समान फल प्राप्त होता है। जिस प्रकार अणुमात्र बीज के दान करनेसे वट–जैसा दीर्घजीवी महान् वृक्ष होता है, वैसे ही मलमासमें दिया हुआ दान अधिक फल देता है। पूरे मास या इस मास में किसी भी दिन में उपवास या नक्त अथवा एकभुक्त व्रत करके यथासामर्थ्य दान–पुण्यादि करें। भविष्योत्तरपुराणके अनुसार भगवान् श्रीकृष्णने इस मासका फलदाता, भोक्ता, अधिष्ठाता स्वयंको बतलाया है, इसी कारण से इसका नाम पुरुषोत्तम है।

इन मास में कुएँ, बावडी, तालाब और बाग आदिका आरम्भ और प्रतिष्ठा, सकाम व्रतोंका आरंभ और उद्यापन, नवविवाहिता वधूका प्रवेश, पृथ्वी, हिरण्य और तुला आदिके महादान, सोमयज्ञ और अष्टकाश्राद्ध, गौका यथोचित दान, वेदव्रत, देवप्रतिष्ठा, दीक्षा, यज्ञोपवीतसंस्कार, मुण्डन, पहले कभी न देखे हुए देव और तीर्थोंका निरीक्षण, संन्यास, अग्निका स्थायी स्थापन इत्यादि कार्य नहीं करना चाहिये। लेकिन तीव्र ज्वरादि प्राणघातक रोगादिकी निवृत्तिके लिये रूद्रजपादि अनुष्ठान, अनावृष्टिके अवसरमें वर्षा करानेके पुरश्चरण, वषट्कारवर्जित आहुतियोंका हवन, ग्रहण–सम्बन्धी श्राद्ध दान और जपादि, पुत्रजन्मके कृत्य और पितृमरणके श्राद्धादि तथा गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्त–जैसे संस्कार और नियत अवधि में समाप्त करनेके पूर्वागत प्रयोगादि किये जा सकते है। इस मास में प्रात: स्नानादिसे निवृत्त होकर भगवान् सूर्यको अर्घ्यदान देकर उनका पूजन करना चाहिये तथा घृत, गुड, अन्नादिका नित्य दान करना चाहिये। इससे धन–पुत्रादिकी वृद्धि होती है तथा संपूर्ण अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

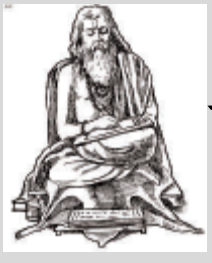

वेदविद्यालय प्रवेश
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान अंतर्गत

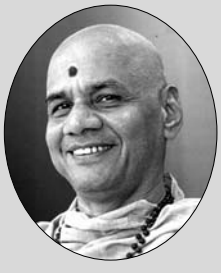

वेदविद्यालयों में वेद–अध्ययन हेतु

वर्ष २०१५ – २०१६

के नूतन प्रवेश दिया जा रहा है।

आयु १० से १२ साल, **शिक्षा** ५ वी कक्षा उत्तीर्ण

–: संपर्क :–

धर्मश्री कार्यालय, पुणे

020 - 25652589

श्री. अविनाश मोरे : 09420900425

वे.मू. श्री महेशजी नंदे : 09890837979

प्रतिष्ठानने मनाया रजत जयंती महोत्सव

– वे. मू. श्री. महेशजी नंदे

पवित्र वेदों के अध्ययन संवर्धन कार्य में अनन्य निष्ठा से समर्पित महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ने अपनी विनम्र सेवा साधना के २५ वर्ष पूर्ण किये हैं। इस अवधि में प्रतिष्ठान ने कई नये मानक स्थापित किये हैं। इसी कारण जनमानस में वेदों के प्रति आस्था बढकर वैदिक विद्वानों के प्रति सम्मान पुनश्च सुप्रतिष्ठित हुआ है। वैदिकों के आत्मविश्वास का भी पुनर्जागरण हुआ है।

प्रतिष्ठान के रजत जयंति वर्ष के उपलक्ष्य में प्रतिष्ठान द्वारा स्थापित प्रथम वेदविद्यालय श्रीसद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय आलंदी में वेदमूर्ति श्री विजय भालेराव, वेदमूर्ति श्री शशांक कुलकर्णी, वेदमूर्ति श्री निखिल भालेराव इन तीन छात्रों के एकसमेत शुक्ल यजुर्वेद घन पारायण का मंगलमय आयोजन दिनांक १६ जनवरी से १५ फरवरी २०१५ तक आयोजित किया गया। इस घन पाठ के परीक्षक के रूप में वेदाचार्य श्री गजानन भट्ट गोडशे गुरुजी एवं वेदमूर्ति श्री मंदार शास्त्री शहरकर ने अपनी पावन उपस्थिति प्रदानकर इन वैदिकों को धन्य किया।

घनपारायण कर्ता तीनों वैदिकों को शुक्ल यजुर्वेद संहिता का अध्ययन वेदमूर्ति श्री भगवानजी जोशी–जो कि श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी में प्रधानाध्यापक हैं – उनके द्वारा पूर्ण हुआ। इन तीनों वैदिकों के संहिता अध्ययन के पश्चात पद–क्रम से लेकर घनांत तक का अध्ययन वेदभास्कर श्री प्रशांतजी जोशी के सान्निध्य में हुआ, आप भी प्रतिष्ठान के आलंदी वेदविद्यालय में अध्यापनरत हैं। प्रतिष्ठान के रजत जयंति महोत्सव के शुभारम्भ के दिन ही सौभाग्य से हम सबके श्रद्धास्थान परम पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री गोविन्दददेव गिरिजी महाराज का तिथि अनुसार अवतरण दिवस भी था। इस उपलक्ष्य में महारथी शांति एवं पू. स्वामीजी के तुलादान तथा पाद्यपूजन का भी आयोजन किया गया जिसमें हजारों कि संख्या में भक्तगण उपस्थित थे।

इस मासिक घन पारायण की अवधि में करवीर पीठाधीश परम पूज्य शंकराचार्य विद्यानृसिंह भारतीजी महाराज, कार्ष्णि पीठाधीश परम पूज्य स्वामी श्री गुरुशरणानंदजी महाराज, वृंदावन, गौ क्रांति अग्रदूत श्री

गोपालमणिजी महाराज, गोभक्तमाल स्वामीजी, प.पू. यज्ञेश्वर महाराज, प.पू. सहस्रबुद्धे महाराज, प.पू. गणेश्वर शास्त्री द्राविड, मा. डॉ. श्री. पी.डी. पाटील, प.पू. कुन्हेकर बाबा, प.पू. श्री अशोक शास्त्री कुलकर्णी, डॉ. देवानंदजी शुक्ला, डॉ. के. सुदर्शन शर्मा आदि अनेक वैदिक विद्वानों के आशीर्वाद प्राप्त हुए।

दि. ८ से १२ फरवरी प्रतिदिन शाम पं. शंतनुजी रिठे द्वारा राष्ट्रचिंतन विषय पर एवं पं. प्रणवजी जोशी द्वारा धर्मचिंतन विषय पर व्याख्यान दिये गये।

१३ फरवरी को श्रीसद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय का वार्षिक उत्सव संपन्न हुआ इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पुणे के प्रसिद्ध समाज सेवा श्री अरुणजी भालेराव ने की एवं मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री राजेंद्रजी तापडिया रहे तथा पू. स्वामीजी उपस्थित भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किया। दि. १३, १४, १५ को प्रतिष्ठान के पूर्व छात्रों का विद्यार्थी संमेलन का आयोजन किया गया जिसमें बडी संख्या में भूतपूर्व विद्यार्थी उपस्थित रहे। दि. १३ और १४ रात्रि में भूतपूर्व छात्रों ने पू. स्वामीजी के साथ विशेष चर्चा की। पू. स्वामीजी के साथ चर्चा करके सभी पूर्व छात्रों का मन भर आया। इसी चर्चा सत्र के दौरान श्री गिरधर जी काले ने प्रतिष्ठान के आगामी योजनाओं के बारे में बताया एवं उचित मार्गदर्शन किया। इसी अवधि में सदाचार आदि विषयों पर भी चर्चा हुई जिसका संचालन डॉ. रवींद्र मुले सर, प्रा. द.दि. कालेसर, डॉ. भाग्यलता पाटसकर आदि विद्वानों ने किया।

दि. १३ फरवरी को आलंदी शहर में 'न भूतो न भविष्यति' ऐसी अद्भुत भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें घन पारायण कर्ता तीनों छात्रों को हाथी पर बैठाया गया। हाथी, घोडे ऊँट, रथ आदि विभिन्न वाहनों पर बैठे प्रतिष्ठान के पूर्व छात्र वैदिक देखते बनते थे। पू. गुरुदेव एवं अन्य वरिष्ठ वैदिक विद्वान भव्य शोभायात्रा की शोभा और अधिक बढा रहे थे। अनेक वारकरी संप्रदाय के छात्र भजन संकीर्तन से वातावरण अत्यधिक प्रसन्न बनता जा रहा था। आलंदी शहर में पहली बार निकाली इस भव्य शोभायात्रा में हजारों कि संख्या में वैदिक, वारकरी एवं अन्य भक्त उपस्थित थे। दि. १५ फरवरी को प्रतिष्ठान के रजत जयंति वर्ष के समापन समारोह मानाया गया। घन पारायण कर्ता तीनों छात्रों को महावस्त्र, प्रमाणपत्र, एवं सुवर्ण कंकण प्रदान कर विशेष सम्मानित किया गया। इस उत्सव के दौरान वेदाचार्य श्री गजानन भट्ट गोडशे गुरुजी को 'महर्षि वेदव्यास पुरस्कार' प्रदान किया गया तथा सभी पूर्व छात्रों, अन्य वैदिकों तथा गत २५ वर्षों से कार्यरत कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इस संपूर्ण कार्यक्रम के कार्यवाहक श्री. सुजित देशमुख गुरुजी ने अपना दायित्व बहुत ही सुंदर रीती से निभाया तथा समस्त पूर्व छात्रों ने इस कार्यक्रम की संपूर्ण जिम्मेदारी स्वयं ने वहन की। इन सभी पूर्व छात्रों के उत्साह को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो स्वयं उत्साह मूर्तिमंत होकर खड़ा है और अब प्रतिष्ठान का कार्य इन सभी पूर्व छात्रों के सहयोग से और अधिक गतिमान होगा।

❖❖❖

गीता परिवार, जयसिंगपुर ने रचा इतिहास।

(५५ हजार बालकों को दिया प्रज्ञासंवर्धन का प्रशिक्षण)

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष योगाचार्य श्री सुरेशजी जाधव द्वारा आविष्कृत एवं संवर्धित 'प्रज्ञासंवर्धन योग' गीता परिवार का प्रमुख उपक्रम है जिसका लाभ गीता परिवार के शिविरों में सहभागी होनेवाले हजारों बालकों ने लिया है। इस उपक्रम के माध्यम से बालक अपनी स्मरणशक्ति, एकाग्रता, शारीरिक एवं मानसिक विकास की क्षमता बढाने के सूत्र पाते हैं। विविध को ध्यान में रखकर नित्य प्रति उचित तरीके से इस अद्भुत योग को किया जाय तो वास्तव में फलदायी है।

जयसिंगपुर गीता परिवार की शाखाध्यक्षा श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी ने अथक प्रयास करके गत १५ वर्षों में 'प्रज्ञासंवर्धन योग' को शहर के हर विद्यालय तक पहुँचाया एवं इस कार्य के माध्यम से सैंकड़ो लोगों को गीता परिवार के साथ जोड़ा। गत १५ वर्षों की तपस्या में एक भी दिन खंडित नहीं हुआ। इसी के परिणाम स्वरूप इस महान कार्य के साथ शिक्षा अधिकारी के पद को सुशोभित करने वाले लोग भी जुड़ते गए और कार्य गतिशील होता गया। जयसिंगपुर गीता परिवार ने गत १५ वर्षों में अनेक उपक्रमों का दायित्व लिया जिसमें ३ करोड सूर्यनमस्कार, 'दो शब्द माँ के लिए–दो शब्द पिता के लिए' यह व्याख्यानमाला, रामचरित मानस पाठ, स्वामी विवेकानंद जयंति के निमित्त व्याख्यानमाला आदि सम्मिलित हैं।

इस वर्ष तो जयसिंगपुर शाखा द्वारा मानो एक नया इतिहास ही रच दिया गया। दि. १२ जनवरी २०१५ को शिक्षा अधिकारी श्रीमती ज्योत्स्ना शिंदे से अनुमति लेकर एस.पी. हायस्कूल, कुरुन्दवाड एवं जलतरण भवन, जयसिंगपुर इन दोनों स्थानों पर अध्यापकों को प्रज्ञासंवर्धन योग एवं सूर्यनमस्कार का सम्यक प्रशिक्षण देकर कार्य का प्रारंभ किया गया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया तत्पश्चात् गीता परिवार के सभी कार्यकर्ताओं ने लगभग ६१ विद्यालयों में जाकर ५५ हजार विद्यार्थियों तक पहुँचकर बालकों के द्वारा हो रही छोटी–छोटी गलतियों की ओर ध्यान दिया। लगभग ३ महिनों तक चले इस उपक्रम का समापन जयसिंगपुर महाविद्यालय के भव्य प्रांगण में ५००० बालकों के द्वारा प्रज्ञासंवर्धन एवं सामूहिक सूर्यनमस्कार का प्रदर्शन किया गया।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. श्री. संजयजी मालपाणी, एवं प्रमुख अतिथि श्री. एम. के. गोंधली साहब का सान्निध्य प्राप्त हुआ। नगराध्यक्षा श्रीमती सुनिता खामकर, श्री. विनोद घोडावत, श्री. शैलेश सूर्यवंशी आदि मान्यवर उपस्थित थे।

डॉ. संजयजी मालपाणी एवं मुख्य अतिथि एम.के. गोंधली साहब अपने ओजस्वी वाणी में विद्यार्थिओंको उचित मार्गदर्शन दिया एवं इस उपक्रम का महत्त्व प्रकट किया। यह उपक्रम सुंदर रीति से संपन्न करने में गीता परिवार, जयसिंगपुर की अध्यक्षा श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी ने अथक परिश्रम किया। कार्याध्यक्ष श्री. आबासाहेब सूर्यवंशी, उपाध्यक्ष डॉ. सुरेश पाटील, श्री. बी.बी. गुरव सर, श्री. अशोकजी सारडा, श्री. राजकुमार पाटील, श्री. प्रकाश माने, श्री. ओमप्रकाश सर, मनीषा पाटील, सौ. अनघा, सौ. नीता, सौ. तनुजा, सौ. अनुराधा, सौ. वनिता, सौ. अर्चना, सौ. राखी, सौ. रेखा, सौ. पुष्पा एवं गीता परिवार के सभी कार्यकर्ताओंने विशेष परिश्रम किया। इस उपक्रम के लिए जयसिंगपुर शहर के दानदाताओं का बहुतही सहयोग प्राप्त हुआ। उन सबका बहुत बहुत अभिनंदन। इस कार्यक्रम का मंच संचालन सौ. स्नेहल कुलकर्णी ने किया।

बाल संस्कार शिविर, नामलगांव (बीड)

गणेश समन्वय आश्रम में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दि. १८ फरवरी से २२ फरवरी तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में प्रात: ५ बजे से रात्री १० बजे तक विभिन्न गतिविधियाँ ली गई। प्रमुख प्रशिक्षक के रूप में गीता परिवार की मुख्य शाखा संगमनेर से पं. अशोक भैय्या एवं श्री. दत्ताजी भांदुर्गे ने बालकों को प्रशिक्षण दिया। इस शिविर में १०० बालक उपस्थित रहे। श्री दत्ताजी भांदुर्गे ने योग, सूर्यनमस्कार के साथ–साथ हमारे ऊपर शत्रु के द्वारा वार होने पर बिना हथियार के स्व संरक्षण किस प्रकार करें इसका प्रशिक्षण बहुत ही सुंदर रीति से दिया जो कि बच्चों को बहुत भाया। पं. अशोक भैय्याने ध्यान, उपासना, भगवद्गीता, चर्चा चिंतन के साथ–साथ 'मैं भी बनुं महान' इस विषय पर चर्चा की। संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, पुणे द्वारा संचालित गणेश समन्वय आश्रम महाराष्ट्र के मराठवाडा इलाके के बीड शहर के समीप नामलगांव में स्थित इस प्रकल्पमें ४ थी से १० वीं कक्षा के समाज के सभी वर्गों के लगभग १०० छात्रों हेतु छात्रावास चलाया जाता है। ये छात्र अन्य छात्रों की तरह पाठशाला में जाते हैं। अन्य समय में उन्हें पढाई में विशेष मार्गदर्शन के साथ योग, व्यायाम, कंठस्थीकरण, खेलकूद, प्रार्थना, संत साहित्य पाठ आदि से युक्त व्यस्त दिनक्रम द्वारा आदर्श नागरिक के रूप में ढालने का प्रयास निवासी अध्यापकों द्वारा किया जाता है। प.पू. स्वामीजी की षष्टिपूर्ति वर्ष में आरंभित यह उपक्रम बीड के विख्यात पूर्व श्री. दुर्गादासजी एवं ॲड्. श्री. कालिदासजी थिगले परिवार द्वारा दान की गई भूमिपर गुरुकुल के उपाध्यक्ष श्री. आर.बी. राठी जी पूरी लगन से चला रहे हैं। गुरुकुल इन दोनों के प्रति कृतज्ञ है।

गणेश समन्वय आश्रम में १०० बालकों का अध्ययन, निवास, भोजन, वस्त्रादि का सारा खर्च आश्रम के द्वारा व्यय किया जाता हैं, यहा तीसरी कक्षा से १० वीं तक के बालक अध्ययन करते हैं। इस विद्यालय के सभी बालक कितने प्रतिभावान हैं, इसका पता प्रतिवर्ष गीता परिवार द्वारा सम्पन्न बाल संस्कार शिविर से ही चलता है। इस शिविर की सम्पन्नता में श्री. रामप्रसादजी राठी, श्री थिगले नाना, श्री. माधवजी कालकुटे, रामदासजी गायके एवं आश्रम परिवार के सभी सदस्यों का बहुत बड़ा योगदान रहा।

बाल संस्कार कथा, जलगांव

गीता परिवार जलगांव की ओर से २९ दिसम्बर २०१४ से २ जनवरी २०१५ की कालावधि में प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा कथित महाभारत कथा के दौरान प्रात:कालीन सत्र में 'बाल संस्कार कथा' का भी आयोजन किया गया जिसमें २०० से अधिक संख्या में बालक उपस्थित थे। इस कथा का वाचन गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्यविस्तारक एवं भागवत कथा प्रवक्ता पं. श्री अशोकजी पारीक (भैय्याजी) के ओजस्वी व सुमधुर वाणी द्वारा किया गया। आपने बालकों के जीवन में संस्कारो के बीज रोपित करने के लिए भागवत व संतों की कथाओं का आश्रय लेते हुए बालकों को रुचिकर लगने वाली कथाओं का श्रवण करवाया एवं नये–नये देशभक्ति प्रेरणादायी गीत भी सिखाये। इस कथा में आ. भैय्याजी एवं बच्चों को पू. गुरुजी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस बाल संस्कार कथा के साथ–साथ 'आओ प्रतिभा जगाएं' कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को अपनी भीतर छुपी प्रतिभा को जागृत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस कथा को सुंदर रीति से संपन्न करने में श्री. अशोकजी जाजु, श्री. अरविंदजी दहाड आदि गीता परिवार के सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

सद्भाव परिवार, लातुर द्वारा आयोजित

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ

कथा प्रवक्ता

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज (पजनीय आचार्य श्री. किशोरजी व्यास)

आस्था मंडपम्,
तिरुमल्ला (तिरुपती), आंध्रप्रदेश

अधिकमास
दि. १७ जून ते २३ जून २०१५

१०८ भागवत कथा
संहिता यज्ञ आयोजन

आप पारायण यजमान बन सकते हैं। आप भागवतप्रेमी श्रोता भी बन सकते हैं।
आप जो सहयोग देना चाहते हैं, उसके लिए सादर आमंत्रित हैं।

जानकारी हेतु संपर्क सूत्र
विष्णुदास तोष्णीवाल - 09421449457
सत्यनाराण हेडा - 09422472212

संपर्क कार्यालय
4, यशवंतराव चव्हाण शॉपिंग कॉम्प्लेक्स,
अशोक हॉटेल चौक, लातुर
02382 - 243788, 09320001111

महाभारत कथा

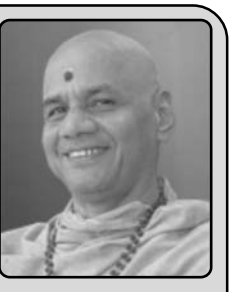

१० से १६ जुलै २०१५

श्रीमान/श्रीमतीजी

जय श्रीकृष्ण,

प.पू. स्व. बद्रीनारायणजी बिहाणी (भाऊसाहबजी) के पावनस्मृति में
गोदावरी के पावन तटपर श्रीक्षेत्र ढालेगांव में राष्ट्रसंत

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की अमृत वाणी में
का आयोजन किया है। इस कथा में आकर कथा श्रवण का लाभ लेकर पुण्य अर्जित करें।

विनीत
बिहाणी परिवार, सेलू

आयोजक : बद्रीनारायण बिहाणी चॅरिटेबल ट्रस्ट, सेलू
संपर्क : ९१ ९४२२१७५१४९

रजत जयंती महोत्सव, ढालेगांव

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा वेदकार्य हेतु संस्थापित महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान अपना रजत जयंती महोत्सव आलंदी के वेदविद्यालय में मनाया। प्रतिष्ठान संचालित विद्यालयों में भी रजत जयंती कार्यक्रम आयोजित हो ऐसी प.पू. स्वामीजी की इच्छा थी, उसके अनुसार श्री समर्थ वेदविद्यालय, ढालेगांव में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में दि. १६/०२/२०१५ से २०/०२/२०१५ तक विद्यालय के अध्यापकोंद्वारा चतुर्वेद पारायण किया गया। दि. २१/०२/२०१५ को श्री गणपति अथर्वशीर्ष सहस्रवर्तन किये गये।

मुख्य समारोह दि. ०२/०२/२०१५, रविवार को सुबह ११.०० बजे आयोजित किया। मा. सुनील चिंचोलकर (पुणे) इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। सेलू के प्राचार्य श्री. विनायकजी कोठेकर कार्यक्रम के लिये विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का अध्यक्ष का स्थान डॉ. द्वारकादासजी लड्ढा ने सुशोभित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीपप्रज्ज्वालन एवं प्रतिमापूजन के साथ हुआ। प्रमुख अतिथि का स्वागत अध्यक्ष डॉ. लड्ढाजी ने तथा विशेष अतिथि श्री. कोंढकर सर का स्वागत श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी ने किया।

कार्यक्रम का प्रस्ताविक सचिव श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी ने किया जिसमें उन्होंने प्रतिष्ठान की स्थापना से अबतक की उपलब्धियाँ, आगामी कार्यक्रम आदि के बारे में जानकारी दी। प्रतिष्ठान के कार्य में मुख्य भूमिका अध्यापकोंकी है इसको देखते हुए विद्यालय में कार्यरत सभी वेदाध्यापकों तथा अन्य विषय के अध्यापकोंका न्यासीयों के द्वारा विशेष सम्मान किया गया।

प्रतिष्ठान के ज्येष्ठ अध्यापक वे.मू. अभयजी पाठक तथा डॉ. विजयकुमारजी पट्टजोशी ने इस अवसर पर अपना मनोगत व्यक्त किया। कुछ छात्रों ने भी इस विषय में अपने मनोगत व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्रमुख प्रवक्ता श्री. सुनीलजी चिंचोलकर का परिचय न्यासी श्री. सीतारामजी मंत्री ने किया।

इसके उपरांत श्री सुनिलजी चिंचोलकर ने अपने विचार रखे। पू. स्वामीजी का वेदकार्य तथा देशकार्य, वेदों के कार्य में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की महत्त्वपूर्ण भूमिका, छात्रों हेतु समर्थ रामदास के आदर्श इन विषयों पर उन्होंने विस्तृत रूप से अपने विचार रखे। प्रतिष्ठान के आगामी कार्य के लिये उन्होंने अपनी शुभकामनायें व्यक्त की।

प्रमुख अतिथि के मार्गदर्शन के बाद डॉ. द्वारकादासजी लड्ढा ने अध्यक्षीय भाषण किया। अपने भाषण में उन्होंने प्रतिष्ठान के कार्य की भूमिका व्यक्त की। न्यासी श्री. संजयजी लड्ढा ने अभार प्रदर्शन किया। पसायदान गाकर कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम का सूत्रसंचालन श्री. कमलाकर पाठक ने किया है। कार्यक्रम में विद्यालय के न्यासी, अध्यापक, छात्र, पालक तथा गीताभवन सत्संग हेतु पधारे सत्संगी भाई–बहन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

श्रीमद् भागवत कथा, पानीपत

– पं. अशोक पारीक

दि. २८ मार्च से ३ अप्रैल २०१५ तक हरियाणा के पानीपत शहर में प.पू. स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज जी की श्रीमद्भागवत कथा का भव्य आयोजन किया गया। रामनवमी के पुण्य पर्व पर भव्य शोभायात्रा शहर के प्रेम मंदिर से देवी मंदिर तक पहुँची। इस कथा के श्रवण हेतु हरियाणा के मुख्यमंत्री भी पधारे। पू. स्वामीजी के द्वारा जब 'चंदन है इस देश की माटी' देशभक्ति गीत गाया गया तब माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहरलालजी खट्टर स्वयं माईक लेकर यह गीत गाने लगे और आपने कथा श्रवण हेतु पधारे श्रोताओं को इस गीत का भाव बतलाकर गीत के भावों के अनुसार अपना भारत बनाने का संदेश दिया। जब माननीय मुख्यमंत्रीजी का कथा में आगमन हुआ उस समय महाराज परीक्षित को शमिक पुत्र श्रृंगी के द्वारा श्राप की कथा चल रही थी। इसी प्रसंग को ध्यान में रखकर आपने पू. स्वामीजी से कहा महाराज हम तो हमारा राज्य भलीभाँती चलाने का प्रयास करेंगे ही, लेकिन फिर भी अगर हमसे राज्य संचालन में कोई गलती हो जाये तो जिस प्रकार परीक्षित के द्वारा गलती होने पर श्रृंगी ऋषी के द्वारा परीक्षित को दण्डित किया गया उसी प्रकार आप भी हमें दण्डित कर सकते हैं। माननीय मुख्यमंत्री ने पू. स्वामीजी के द्वारा लिखित भगवद्गीता के १८ अध्यायों का सार 'गीता सार' का अपने कर कमलों से प्रकाशित किया। पू. स्वामीजी एवं आयोजकों ने मुख्यमंत्री को माला, शॉल, श्रीफल एवं भगवान् श्री राधाकांतजी की प्रतिमा देकर सम्मान किया।

इसी कथा के दौरान हरियाणा के महामहीम राज्यपाल श्री. कप्तानसिंहजी सोलंकी भी पधारे। आपने पू. स्वामीजी के मुखारविंद से नि:सृत श्रीमद्भागवत कथा को बडे ही ध्यान व एकाग्रता से सुना। माननीय श्री राज्यपालजी के द्वारा श्रोताओं को दिया गया उद्बोधन तो संपूर्ण मानव जीवन का सार ही था। मा. राज्यपालजी को सुनकर ऐसा बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ की कोई राजनैतिक पार्टी का वक्ता बोल रहा है। आध्यात्मिक से परिपूर्ण जीवन के रहस्यों को सुनकर सभी लोग बहुत प्रभावित हुए। आपने कहा कि, समृद्ध भारत केवल खेत–खलिहानों, उद्योंगों व कंदराओं में नहीं बसता है, बल्कि इसका मूलाधार आध्यात्मिकता में है। वेद पुराण और ग्रंथ, इनमें विशेषकर गीता हमारे अध्यात्म का मूल है। अगर किसी को इस भौतिक प्रगति युग में आपाधापी की बजाय यदि मानसिक शांति प्राप्त करनी है, तो गीता सार को व्यावहारिक तौर पर जीवन में उतारना होगा।

उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतवर्ष धार्मिक कथाओं और आध्यात्मिकता में बसता है और यदि भारत को जानना है, तो भारत के महान ग्रंथों और उन महापुरुषों को जानना होगा।

माननीय राज्यपालजी ने पू. गुरुदेव के कार्य का परिचय पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हे अनंत शुभकामनाएं प्रदान की। ज्ञानेश्वर समन्वय परिवार पानीपत के द्वारा आयोजित इस भव्य कथा में और भी अनेक संत महापुरुषों का आगमन हुआ। जिसमें महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानानंदजी महाराज, जगद्गुरु श्री हंसदेवाचार्यजी महाराज आदि संमिलित थे। यह कथा ज्ञानेश्वर समन्वय परिवार, पानीपत द्वारा आयोजित की गई। जिसके मुख्य यजमान श्रीमान् सुशीलजी गुप्ता एवं श्रीमती मिनाक्षीजी गुप्ता रहे।

।। राम कृष्ण हरि ।।

संत शिरोमणि श्री तुकाराम महाराज के श्री क्षेत्र देहू स्थित गाथा मंदिर में
समर्थ श्री रामदास स्वामी साधक-निवास के
निर्माण कार्यार्थ

श्रद्धालुओं को आवाहन

सभी भाविक भक्तों को महाराष्ट्र के भागवत धर्म की समरसता की प्रतीति दिलाने का एक अनमोल अवसर प्राप्त हो रहा है। जगद्गुरु संत श्री तुकाराम महाराज की पुण्यभूमि श्री क्षेत्र देहू में पू. महानुभाव हरिभक्ति पारायण श्री. पांडुरंग महाराज घुले द्वारा अतीव कल्पकता एवं परिश्रमपूर्वक निर्मित 'गाथा मंदिर' यह वारकरी संप्रदाय एवं भागवत धर्म की शान है। इस मंदिर की विशालता, दिव्यता, सुंदरता एवं प्रबंध इन सब के कारण किसी भी भगवद्भक्त का हृदय श्रद्धा से ओतप्रोत हो जाता है।

मंदिर की समग्र योजना के अनुसार मंदिर के ही प्रांगण में, पुण्यतोया इंद्रायणी मैया के तट पर संत साहित्य के अध्ययन हेतु गुरुकुल पद्धति की पाठशाला का प्रारंभ होने जा रहा है। गाथा मंदिर के न्यासियों को प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज ने विनंति की कि इस भवन का नामकरण 'समर्थ श्री रामदास स्वामी साधक निवास' इस प्रकार किया जाय। न्यासियों ने भी उदार अंत:करण से उसे स्वीकृति प्रदान की।

संतश्रेष्ठ श्री तुकाराम महाराज के श्री क्षेत्र देहू में, वहाँ भी गाथा मंदिर के प्रांगण में श्री समर्थ रामदास के नाम से मंडित साधक निवास यह मानो एक दीपस्तंभ है जो महाराष्ट्र की भावी पीढियों को भागवत धर्म की समरसता को उजागर करता रहेगा। इसी के कारण वारकरी संप्रदाय एवं समर्थ संप्रदाय इन दोनों संप्रदायों में अकारण प्रतीत होनेवाला भेद का अंधकार तथा दूरी समाप्त होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

यह पूरा प्रकल्प प.पू. स्वामीजी द्वारा स्थापित 'संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल' इस न्यास के माध्यम से निधि संकलन के बल पर पूरा होगा। सभी धर्मप्रेमी, राष्ट्रप्रेमी भाविकों से-विशेषकर समर्थभक्तों से-विनम्र प्रार्थना है कि इस विराट उपक्रम हेतु सोत्साह अधिकतम दान देकर अपनी धर्मनिष्ठा, राष्ट्रनिष्ठा एवं समर्थनिष्ठा का परिचय दें।

आइये! सदियों की सांप्रदायिक उदासीनता एवं धर्मग्लानि को दूर कर अपने धर्मतेज को निखारने के इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाते हुए अपने धनको उदात्त कार्य में समर्पित कीजिए। हमारे संतों ने तथा वीरों ने अपने जीवित की तथा प्राणों की आहुति देकर धर्म जीवित रखा। उसी धर्म की रक्षा हम अधिकतम अर्थसहयोग से करेंगे।

इस अतीव महत्त्वपूर्ण प्रकल्प में आप निम्नानुसार सहयोग दे सकेंगे –

१) 'समर्थ रामदास स्वामी साधक निवास' में स्वयं के अथवा अपने प्रिय व्यक्ति, स्वर्गस्थ माता-पिता आदि परिवारजनों के नाम एक कक्ष निर्माण कर पुण्यार्जन करें तथा उसके द्वारा पूर्वजों की सत्कीर्ति को स्थायी रूप दें। यह दान स्वयं दें अथवा अन्य दानदाताओंको प्रेरित कर के दिलवाएँ। ऐसे नामांकन हेतु अपेक्षित दानराशि का विवरण निम्नानुसार है –

वास्तु वर्णन	कक्ष संख्या	प्रतिकक्ष अपेक्षित दानराशि रुपये
ग्रंथालय	१	२१,००,०००
अध्ययन कक्ष	४	१५,००,०००
कार्यालय	१	०९,००,०००
साधक छात्र निवास	११	०७,००,०००
अध्यापक निवास	४	०५,००,०००

दानदाता द्वारा निर्देशित नाम का शिलापट्ट उस कक्ष के प्रवेशद्वार पर लगाया जाएगा।

२) समर्थ श्री रामदास स्वामी की यह सेवा यह सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पडाव है यह ध्यान में रखते हुए अधिकतम अर्थ-सहयोग करें।

३) अधिक संभव न हो तो भी न्यूनतम रु. ५,१००/- प्रदान कर समर्थ-कीर्ति-सुगंध फैलाती इस वास्तु में आपके परिवार की ओर से एक शिला समर्पण की सेवा तो अवश्य करें।

४) कार्यालय से कच्ची रसीद-पुस्तक लेकर लोगों से यथासंभव दान-संकलन करें।

५) यह भी संभव न हो तो यथाशक्ति कितनी भी छोटी-मोटी रकम समर्पित करें। रुपयों की आवश्यकता तो है ही, परंतु उससे भी मूल्यवान् है आपका श्रद्धाभाव।

आप अपना दान 'संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल' इस नाम के चेक, डी.डी. द्वारा अथवा नकद रूप में भी दे सकेंगे। 'गुरुकुल' को आयकर विभाग की ८० जी की सुविधा है। उससे आप लाभान्वित हो सकेंगे। आप के दान की रसीद कृपया अवश्य लें।

भवदीय

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल

*** विनम्र प्रार्थी ***

स्वामी गोविंददेव गिरि (आचार्य किशोर व्यास)

:: दान भेजने का पता ::

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल,

धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप, पुणे विद्यापीठ रोड, पुणे-४११०१६

दूरभाष क्र.: 020-25652589 मो.: श्री. दत्ता खामकर 07709103293 Email ID: dharmashree123@gmail.com

पृष्ठ क्र. १३ से

International Conference to Re-establish Vedic India नामक इस परिषद का उद्देश्य शिक्षित भारतीय जनमानस में वेदों के प्रति श्रद्धा का पुनरोदय एवं दृढीकरण करना था। विदेशों से इसके लिये लगभग १२० प्रतिनिधि पधारे थे। ये सभी महर्षि महेश योगी के अनुयायी तो हैं ही, किंतु साथ-साथ अपने अपने विषयों के विलक्षण विद्वान् भी रहे हैं। शरीरशास्त्र, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान शास्त्र, प्रबंधन शास्त्र, वैदिक वास्तुविद्या, रसायन शास्त्र, ध्यानयोग विद्या आदि इनके विषयों में पारंगत इन देशी-विदेशी विद्वानोंने व्याख्यान, प्रयोग एवं प्रात्यक्षिक प्रदर्शनों के द्वारा प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे वैदिक ध्वनि-वेदघोष की महत्ता को प्रमाणित किया, तो दूसरी ओर वेदप्रणीत सिद्धांत-विचारों की उपयोगिता को भी स्पष्ट एवं पुष्ट किया। मानव शरीर की हर कोशिका के साथ वेदों के किन मंत्रोंका संबंध है तथा भावातीत ध्यान के माध्यम से परावाणी से संबंधित होकर वेदमंत्रों का उच्चारण करनेसे वे ही मंत्र कैसे अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं इस विषय के प्रात्यक्षिकोंसे सभी श्रोता एवं प्रेक्षक अभिभूत हो गये।

तीन दिनों में ग्यारह सत्रों में विभाजित इस परिषद का हर सत्र एक नया विश्वास-नयी श्रद्धा का उदय करता था और हृदय स्पंदित एवं मस्तक विनम्र हो जाता था हमारे ऋषियों के ज्ञान-विज्ञान की इस पूँजी के समक्ष! वेदों का ज्ञान मानवमात्र के कल्याण के लिये है। वह सभी धर्म-मत-संप्रदायोंसे ऊपर एवं अतीत है। वह प्रकृतिका-स्रष्टा का संविधान है। उसके शब्दों की, उच्चारणपद्धति की, अर्थबोध की सुरक्षा एवं वैदिक सिद्धांतोंकी सर्वत्र सुस्थापना ही मानवमात्र के कल्याण का सही, सरल एवं वैज्ञानिक मार्ग है यह विश्वास निर्माण करने में यह परिषद पूर्णतया सफल रही और महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का नाम एवं कार्य भी वैश्विक पटलपर प्रथम पदन्यास करना प्रतीत हुआ।

भक्तशिरोमणी हनुमान जी ने जोडा भारत को पूर्वोत्तर से

– डॉ. श्री. संदीपराज महिंद

पूर्वांचल, पूर्वोत्तर, ईशान्य भारत, नॉर्थ ईस्ट। जितने प्रकार के संबोधन उतना ही वैविध्य, उतनी ही समस्यायें, उतने ही प्रश्न, किन्तु अपनी परंपराओंके प्रति अडीग श्रद्धा भी। मानवता का सही अर्थ जीनेवाली अलग अलग जनजातियाँ अपनी विशाल प्राकृतिक संपदा के साथ धारण करनेवाला फला-फला समृद्ध क्षेत्र। झरनों के बहते जलप्रवाह के साथ जीवन जीने की कला सीखानेवाली माँ कामाख्या के आशीर्वाद से अभिषिक्त नगरी।

ब्रह्माजी स्वर्ग से निकल भारतमाता के लाडले दुलारों पर कृपाशीर्वाद बरसाने के लिये जैसे ही निकल गये उन्हें भी पूर्वोत्तर ने रोक लिया। सारी जैविक संपदा को धारण करनेवाली इस सृजनकर्ता की पूरी टोकरी इसी क्षेत्र में खाली हो गयी। प्रकृति के साथ साथ अचम्भित करनेवाली भक्ति व शक्ति परंपरा ने भी न केवल पूर्वांचल को अपितु पूरे भारतवर्ष को भी गौरवान्वित किया। श्री उद्धव जी के माध्यम से सृजित श्रीमद्भागवत को श्रीमद् शंकरदेवजीने असमिया भाषा में अनुवादित किया। तथा माधवदेव जी ने इस विचारधारा को आगे बढाया। निरगूण भक्ति परंपरा को प्राथमिकता देकर नामघरों (मंदिर) में मूर्तीपूजा को त्याग श्रीमद्भागवत का ही दर्शन व पठन अधिष्ठान स्वरूप होने लगा। सत्रों के माध्यम से श्रीमद्भागवत के आचार-विचार-प्रचार हेतु ब्रह्मचारी व संन्यासियों की पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के रूप में सुचारू व्यवस्था खडी हो गयी। चैतन्य महाप्रभुजी के प्रेरणा से वैष्णव परंपरा ने मणिपुर को अपना लिया। अरुणाचल प्रदेश के आदि व निशि खामती, इंदुमिस्मी आदी स्थानीय परंपराओं ने सूर्य व चंद्रमा को दोनी-पोलों के रूप में भगवान् स्वरूप स्वीकार कर प्रकृति की ही आराधना शुरु की। पूर्वांचल में बढनेवाली इस भक्ति परंपरा को लाचित बडफुकन, आहोम सम्राट ऊ कियांग ताम्बाह ऊ तिराथ सिंह, राजा नरनारायण, इम्फाल के राजकुमार, राणी माँ गाइडिब्ल्यू आदि शक्ति-साधकों ने समय समय पर शौर्यतेज से साथ देकर अपना दायित्व निर्वाहन किया। भक्ति-शक्ति के उचित समन्वय को साधकर पूर्वोत्तर क्षेत्र ने माँ भारती का रथमार्ग प्रशस्त किया था।

किन्तु मध्यकाल में अंग्रेजों का शासन व ईसाईयत की जहरीली लताओं ने पूर्वांचल को ग्रासा। बांग्लादेश की अवैध घुसपैठ हावी हो गयी। संस्कृति-सभ्यता व परंपराओं की रक्षा जीवन त्यागकर करनेवाला ईश्वर का वरदायिनी यह क्षेत्र समस्यायें व आतंक के खतरे में झुलझने लगा। अल्फा, उल्फा, बोडो, नागा, कूकी, कूच, कर्बी, एनएससीएन, मिझो. स्टुडंटस् असोसिएशन आदि अलगाववादी संगठन खडे होने लगे। हर एक जिला स्वातंत्र्य चाहता है, प्रांत देश से अलग होकर राष्ट्ररूप लेना चाहता है। ऐसी विपरीत परिस्थिति में बहुतसे राष्ट्रीय विचारधारा में काम करनेवाली संस्थाएँ आगे जाने लगी। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ने भी इसमें अपना समर्पण अर्पित करने का निश्चय कर भारत के पूर्व सीमा पर वेदों के गायन की गूँज निर्माण की। तीन वर्ष पूर्व

जगद्गुरु शंकराचार्य काञ्चि कामकोटि पीठ, पू. स्वामी जयेन्द्र सरस्वति जी के पावन करकमलों से आशीर्वाद स्वरूप मणिपुर वेदविद्यापीठ का प्रारंभ हुआ। पूर्वोत्तर का समुच्चय भारतवर्ष के साथ जोडने में वेदमन्त्रों का सेतु अधिक सक्रियता से काम कर सकता है यह मानस रखनेवाले पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज इस नवारंभ के प्रेरणास्त्रोत बने। जहाँ व्यवसायी, शासकीय कर्मचारी, सामाजिक संगठन भी जाने में कतराते हैं उसी क्षेत्र को स्वामीजी ने अपने इस अनूठे कार्य की प्रयोगशाला बनाकर चार हजारे, जिला सेनापति, मणिपुर को ममत्व के साथ गले लगाया। वेदमन्त्रों के जागरण से उत्साहित जनमानस में भक्ति–शक्ति के दिव्य पुंज को स्थापित करने हेतु पू. स्वामीजी ने इस वर्ष श्री हनुमत् कथा के माध्यम से अपनी कृपादृष्टी बरसायी।

२१ फरवरी से २७ फरवरी के बीच में आयोजित इस कथा का असमिया, मणिपुरी, अरुणाचली तथा नागा बंधु–बहनों ने भी आकंठ पान किया। कथा के प्रारंभ स्रोत असम नागालँड व त्रिपुरा के महामहिम राज्यपाल श्री. पद्मनाभ बालकृष्ण आचार्य बने। अपने उद्घाटन सत्र में उन्होंने संस्कृत–संस्कृति व वेदों के रक्षार्थ पूर्वोत्तर में स्थापित मणिपुर वेदविद्यापीठ के इस प्रयास को खूब सराहा तथा पू. स्वामीजी के अद्वितीय कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा भी की। अपने संबोधन में योग, आयुर्वेद, वेद व संस्कृत की विस्तार से चर्चा कर २०० अलगाववादी गुटों के कारण टूटने के कगार पर खडे पूर्वोत्तर को पुन: गले लगाने का प्रयास करनेवाले ऐसे कथाओं के भरसक आयोजनों पर बल देने का आवाहन उन्होंने किया।

पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज जी ने भी भक्तशिरोमणि श्री हनुमान जी का चरित्र सात दिनों में प्रस्तुत करते समय पूर्वोत्तर की समस्याओं व समाधानों को भी सटीक प्रमाण दिये। विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों को अपने सामाजिक संस्थाओं के कामों के साथ जोडकर राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त करने का आवाहन किया। पूर्वांचल के छात्र एवं युवकों के सामने हनुमान जी का आदर्श रखते हुये आदर्श विद्यार्थी, आदर्श साधक, आदर्श सेवाभावी कार्यकर्ता, आदर्श भक्त, आदर्श नेता, आदर्श संघटक, आदर्श मित्र आदि पहलु सोदाहरण बखुबी रखे। जिस पक्ष में हनुमानजी, उसी पक्ष की जीत यह रामायण एवं महाभारत का सिद्ध उदाहरण सामने रखते हुये उन्होंने अंतीम गन्तव्य प्राप्ति हेतु हनुमान जी का ही अपने जीवन में पूर्णत: उतारने का आग्रह किया।

श्रीकृष्ण सेवा निधि, पुणे के सहयोग से श्रीहरि सत्संग समिति के संपूर्ण तत्त्वावधान में इस दिव्य हनुमत् कथा का आयोजन संपन्न हुआ। वनबंधु परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री. अरुणकुमार बजाज, श्रीहरि सत्संग समिति के अध्यक्ष श्री. सागरमल बुडाकिया, फ्रेंडस ऑफ ट्राइबल सोसायटी के गुवाहाटी चॅप्टर अध्यक्ष श्री. पवनकुमार अग्रवाल, पूर्वांचल क चेयरमैन श्री. सुभाष अग्रवाल, विश्व हिन्दू परिषद के श्री. अजीतजी जाना, कार्यक्रम संयोजक श्री. श्यामसुंदर सारडा तथा मणिपुर वेदविद्यापीठ के श्री. संदीपजी सोमाणी जी का आयोजन व्यवस्था में सफल प्रयास रहा। पुरे आयोजन के दौरान वनबंधु परिषद के राष्ट्रीय कार्य अध्यक्ष श्री. सजन भजनका, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. सत्यनारायण काबरा, मुंबई के श्री. सतीश अग्रवाल, कोलकाता के श्री. सुभाष मुरारका, विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री श्री. चंपत राय, मणिपुर वेदिवद्यापीठ के न्यासी श्री. कृष्णनारायण अग्रवाल, श्री. वासुदेव सिंह, श्री. राधा गोविंदजी तथा श्री. कार्की जी ने पू. स्वामीजी से आशीर्वाद लिये।

श्री हनुमत् कथा के निमित्त पूरे आठ दिन स्थायी रूप में गुवाहाटी रहनेवाले पू. स्वामी गोविंददेव गिरि

जी महाराज जी के समय की समाहित में उपाययेजना स्थानीय कार्यकर्ताओं ने अलग अलग विषयवस्तुओं को महत्त्व देते हुए की। दि. २२ मार्च की शाम मारवाडी युवा मंच के गुवाहाटी चॅप्टर का पदग्रहण व शपथ समारोह पू. स्वामीजी के उपस्थिति में हुआ। हुतात्मा (शहीद) राजगुरु, हुतात्मा सुखदेव व हुतात्मा भगतसिंह का हौतात्म्य दिन दिनांकानुसार २३ मार्च भी प्रेरणादिन के रूप में मनाया गया। युवा कार्यकर्ताओंने भगतसिंह जी के जीवन का दर्शन नाटिकामंचन द्वारा किया व पू. महाराजजी से आशीष व पाथेय प्राप्त किया।

दि. २३ मार्च २०१५ को ही पू. स्वामीजी के नेतृत्व में पूर्वांचल क्षेत्र के उद्योगपति व व्यवसायियों का एक प्रतिनिधि मंडल (२८ प्रतिनिधि) महामहिम राज्यपाल श्री पद्मनाभ बालकृष्ण आचार्य जी से मिलने राजभवन गया। आचार्य जी ने सबको नववर्ष की शुभकामना देते हुए सबके साथ अल्पाहार भी किया। राज्यपाल जी के आवाहन पर पू. महाराज जी के उपस्थिति में समूचे उद्यमी वर्ग ने पूर्वांचल के विकास हेतु सक्रियता से दान देने का वचन दिया। महामहिम राज्यपाल जी ने भी पूर्वोत्तर की समस्याएँ देख उसके निवारण हेतु आगे बढने के इस प्रयास की भूरी भूरी प्रशंसा की।

वनबंधु परिषद गुवाहाटी चॅप्टर की वार्षिक बैठक पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के पावन उपस्थिति में दि. २६ मार्च को संपन्न हुयी। बैठक में पूर्वांचल में लगातार प्रवास कर उस क्षेत्र को समझने में प्रयासरत डॉ. संदीपराज महिंदजी ने पूर्वोत्तर भारत की समस्याएं वास्तविक सत्यता व निवारणार्थ उपायों का विवेचन सरलता से किया। वर्तमान में चलनेवाले प्रयासों के तथ्यों को सामने रखते हुये उन्होंने शुद्ध सात्त्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है। इस कृतीशील पद्धति अपनाने, पर पुरजोर समर्थन किया। बैठक की समाप्ति पू. स्वामीजी के आत्यन्तिक मधुर वाणी से 'परिवार की एकता में ही देश की एकता' के सूत्र विवेचित कर गयी। 'मैं नहीं, तूही' की व्यापक विचारधाराही राष्ट्र के कल्याण में लग सकती है अत: अहंकार त्याग सम्यक कृति का आवाहन महाराज जी ने किया। पू. स्वामीजी की आठ दिन की गुवाहाटी, असम यात्रा सभी दृष्टि से फलीभूत हो गयी।

❖❖❖

अग्रिम निवेदन
श्री हरिहर भक्ति महोत्सव २०१६

श्री हरिहर भक्ति महोत्सव २०१६ स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) में ही होगा। उसकी तारीखें कृपया नोट कर लेवें–

१) गीता साधना शिबिर ११/०७/२०१६, सोमवार से १८/०७/२०१६ सोमवार तक

२) श्री गुरुपूर्णिमा दि. १९/०७/२०१६ मंगलवार

३) श्री हरिहर भक्ति महोत्सव दि. २०/०७/२०१६ बुधवार से ०९/०८/२०१६ मंगलवार

श्री हरिहर भक्ति महोत्सव में पधारने के इच्छुक महानुभाव, जिन्हें आवास व्यवस्था के लिये कमरे बुक कराने हो अथवा एक दिन का यजमान होना हो तो कृपया संपर्क करें :–

१) श्री. चंद्रकांत केले: 09503888889, २) श्री. कमल नारायण भांगडिया: 09346210668
३) श्री. नारायणदास मारु: 09427835505

ॐ

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान
एक दृष्टिक्षेप में

वर्ष	छात्र	लाभान्वित		वेदपाठशालाएं		कुल व्यय रु. (लाखो में)
		अध्यापक	अन्य वैदिक	संलग्न	अनुदानित	
वर्ष १९९१–९२ से २००९–१० तक						६७७.११
वर्ष २०१० – ११	३८१	३४	१८	१९	०४	८९.१०
वर्ष २०११ – १२	४०७	३९	१७	२२	०४	१०२.८८
वर्ष २०१२ – १३	४६९	४४	१७	२२	०४	१०८.४७
वर्ष २०१३ – १४	४९७	४७	१३	२३	०१	१०६.०३
				कुल व्यय लाख रु.		१०६१.७७

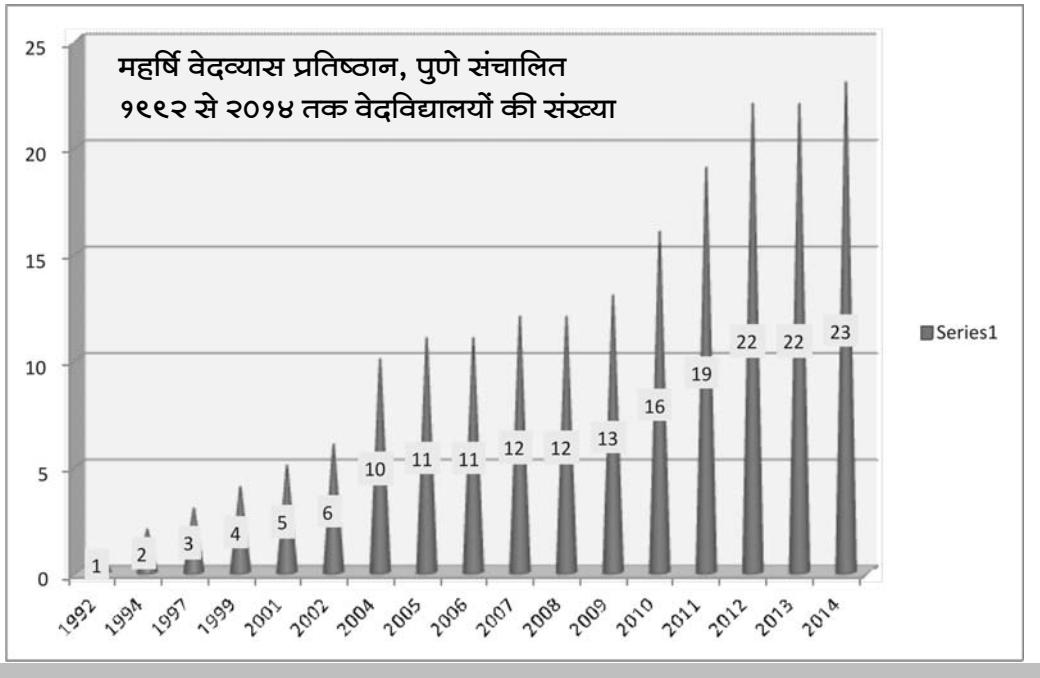

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे
१९९२ से २०१४ तक लाभान्वित छात्रों की संख्या
लाभान्वित छात्र
600
500
400
300
200
100
0
122
112
183
198
216
255
256
256
165
288
273
281
254
307
284
317
301
311
355
381
405
469
497
Series1
वर्ष
1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे
कुल व्यय (लाख रुपयों में)
१९९२ से २०१४ तक वेदसेवा के लिए व्यय
120
100
80
60
40
20
0
2.84
4.47
9.31
12.85
13.54
15.73
18.66
30.36
32.18
31.21
41.72
49.84
49.99
53.13
53.12
62.18
46.79
56.68
70.51
89.1
102.87
108.45
106.03
Series1
1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014

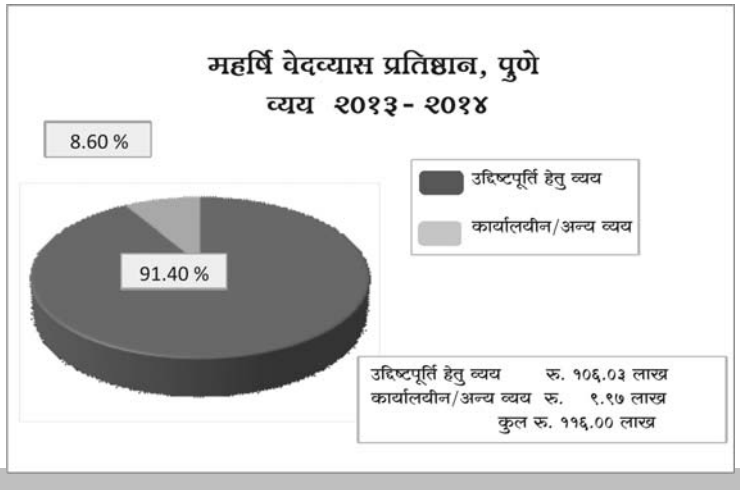
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे
व्यय २०१३- २०१४
8.60 %
91.40 %
उद्दिष्टपूर्ति हेतु व्यय
कार्यालयीन/अन्य व्यय
उद्दिष्टपूर्ति हेतु व्यय रु. १०६.०३ लाख
कार्यालयीन/अन्य व्यय रु. ९.९७ लाख
कुल रु. ११६.०० लाख

संत श्री गुलाबराव महाराज शताब्दि भक्तिमहोत्सव

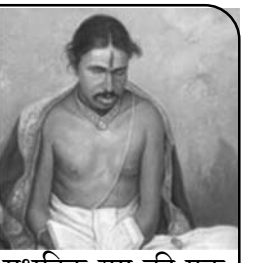

स्थान : फोगला आश्रम, श्री वृंदावन धाम,
दिनांक २३ से २५ सितंबर २०१५
(भाद्रपद शु. १० से १४)

विदर्भ के महान संत प्रज्ञाचक्षु समन्वय महर्षि संत श्री गुलाबराव महाराज आधुनिक युग की एक लोकोत्तर विभूति रहे हैं। वेद, पुराण, समस्त दर्शनशास्त्र एवं विश्व के सभी धर्ममतों का ऐसा व्याख्याता और समन्वयकर्ता पूर्व काल में कोई नहीं हुआ। अद्भुत योगबल तथा सर्वस्पर्शी प्रज्ञा के धनी होकर भी वे गोपी भाव का आलंबन लेकर निरंतर श्रीकृष्णभक्ति में लीन रहते थे। इसलिये उनके प्रिय वृंदावन धाम में उनकी शताब्दि संजीवन पुण्यस्मृति में भक्तिमहोत्सव का आयोजन किया है।

कार्यक्रम का स्वरूप

प्रथम दिवस : बुधवार दि. २३ सितंबर
प.पू. गुरुस्वामीजी श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी एवं पू. सरसंघचालक
मा. श्री. मोहनरावजी भागवत के करकमलोंद्वारा **संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय के नूतन भवन का उद्घाटन** सायं. ४.०० बजे
भक्ति महोत्सव का शुभारंभ सायं. ५.०० बजे

द्वितीय दिवस : गुरुवार दि. २४ सितंबर,
प्रात: ७.०० से ९.०० तक श्री वृंदावन धाम की संकीर्तन परिक्रमा
सायं. ५.०० से ७.०० तक व्रज के संत एवं विद्वानोंका पूजन एवं प्रवचन

तृतीय दिवस : शुक्रवार दि. २५ सितंबर (मुख्य दिवस)
प्रात: ७.०० से ९.०० तक श्री ठाकुर एवं महाराज श्री की महापूजा
सायं. ५.०० से ७.०० तक व्रज के संत एवं विद्वानों का पूजन एवं प्रवचन

चतुर्थ दिवस : शनिवार दि. २६ सितंबर, वज्र के संत एवं विद्वानों का पूजन एवं प्रवचन

पंचम दिवस : रविवार दि. २७ सितंबर, व्रज के संत एवं विद्वानों का पूजन एवं प्रवचन

समापन–शुभाशीर्वाद

व्रजमंडल के नंदबाबा प.पू. कार्ष्णि श्री गुरुशरणानंदजी महाराज (रमणरेती)

दि. २२ से २८ सितंबर तक पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की 'श्रीमद् भागवत कथा रसवर्षा का भी आयोजन इसी स्थान पर प्रात: ९.०० से १०.०० तक होगा।

कृपया सभी भाविक सपरिवार इष्ट मित्रोंसहित पधारकर इस दिव्य आनंद का लाभ लें।

पूर्वसूचना मिलनेपर ही साधकोचित निवास एवं भोजन की व्यवस्था उपलब्ध होगी।

: संपर्क :

श्री. जगदीश जी सोंथलिया – ९१-९८४८०१४९६५ श्री. अजयजी सोंथलिया – + ९१-९४२२२४१६८२
वे.मू. संतोष गुरुजी – ०९३१९८६६९१४ श्री. पं. श्यामसुंदरजी महाराज (भक्तिधाम) – ९५०३४१६७७३
श्री. अविनाश मोरे (काका) – ०९४२०९००४२५/०९९९७६००२५२ जनकल्याण कार्यालय : ०९८१००१८९०९

स्व. पण्डित पुरुषोत्तम शास्त्री फडके

– डॉ. श्रीमती अंशुमती अ. दुनाखे

'प्रातः नमामि तमसः परमर्कवर्णं।
पूर्णं सनातन पदं पुरुषोत्तमख्यम्।।'

मैं रुक गयी। मेरे गुरुदेव का ही वर्णन आचार्य-श्रीमत् आदि शंकराचार्य कर रहे हैं, ऐसा लगा- अज्ञान अंधःकार दूर कर श्रेष्ठ आदित्य का वर्ण धारण करनेवाले, जो पूर्ण ब्रह्मतक पहुँच चुके हैं, सनातन हैं और जो 'पुरुषोत्तम' नाम से विख्यात हैं।

सच्चा आर्य, सच्चा ब्राह्मण, सच्चा मानव यदि कोई देखना चाहे तो पण्डित पुरुषोत्तम शास्त्रीजी का दर्शन कर सकते थे। अब लगता है कि विश्व की 'धर्मश्री' फीकी पड गयी है। शास्त्रीजी का जन्म एक वेदशास्त्रसंपन्न घर में हुआ। उनका जीवन वेदप्रणीत मार्ग से चलनेवाला जीवन रहा।

बाल वय में ही शिक्षा के लिए पिता ने रत्नागिरी में संस्कृत पाठशाला में अध्यापक के हवाले किया। इसी काल में उन्हें व्याकरण-वाचस्पति दिगंबरशास्त्री जोशी (काशीकर) के पास अध्ययन करने का सौभाग्य मिला। उनसे उन्होंने व्याकरण शास्त्र, वेदान्त, न्याय, धर्मशास्त्र, अलंकार आदि का अध्ययन किया। पुरुषोत्तमशास्त्री के देवगृह में देवताओं के साथ माता-पिता तथा गुरु का स्थान था। उनका पूजन नित्यनेम से होता था।

आगे चलकर पुरुषोत्तम शास्त्रीजी ने पुणे वेदशास्त्रोत्तेजक सभा, काशी संस्कृत विश्वविद्यालय, बडोदा एवं मैसूर रियासत की व्याकरण, नव्य व्याकरण, मीमांसा, अद्वैत वेदांत, न्याय आदि विषयों की अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। एक बार उनकी व्याकरण शास्त्र में रुचि एवं गति देखकर परीक्षक पाँच घंटे इनकी मौखिक परीक्षा लेते ही रहे। आज तक इतना बुद्धिमान छात्र उन्हें नहीं मिला था। आज वे अपने दिल की मुराद पूरी कर रहे थे और फूले नहीं समाते थे।

शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्होंने गृहस्थाश्रम का स्वीकार किया। फाटक हाईस्कूल के आमंत्रण पर वहाँ संस्कृत एवं अर्धमागधी का अध्यापन करने लगे। संस्कृत पाठशाला तो उनकी अपनी ही थी। 'व्याकरणाचार्य' 'व्याकरण चुडामणी' बने पुरुषोत्तम शास्त्री सुबह आठ से दस साढे दस तक संस्कृत पाठशाला में पढाते, दोपहर फाटक हाइस्कूल में पढाते, शाम को फिर संस्कृत पाठशाला में। इतना सारा कम हुआ, और समाज-सेवा होनी चाहिए, इस विचार से उन्होंने अनेक संस्थाओं की स्थापना की, उनके प्रबंध का भार उठाया। किसी के भी आमंत्रण पर प्रवचन देते थे। अखंड विद्यादान करते रहे। हम लोगों ने उनसे ग्यारह प्रमुख उपनिषद, कारिका, ब्रह्मसूत्र, विवेकचूडामणि, पंचदशी जैसे अनेक ग्रंथों का उनके घर पर निवास कर अध्ययन किया है। शास्त्रीजी की उम्र जब अठ्ठानबे साल की थी सुबह छः बजे कुछ वैद्य चरक-संहिता पढने आने थे।

उन्होंने आचरण के लिए कठिन गायत्री-पुरश्चरण किया था। एक वर्ष के लिए वे परिवार से अलग रहे। गायत्री पुरश्चरण की पात्रता पाने के लिए दस हजार जाप, फिर चौबीस लक्ष जाप फिर होम-हवन के लिए छः लक्ष जाप उन्होंने किया। उस समय वे सचमुच अर्कवर्ण के ही हो गए थे।

सनातन विचारों के होने पर भी वे रूखे नहीं थे। मानवता, वात्सल्य का अखंड स्रोत हृदय में उमडता ही रहता था। इसलिए उनका शास्त्राचार लचीला था। तत्त्व न छोडते हुए, सदाचार न छोडते हुए वे अन्यों की भलाई के लिए अपने आचरण को लचीला रखते थे। पुरश्चरण काल में मौन रखते थे, मगर एम.ए. के छात्रों का नुकसान न हो इस विचार से उन्हें पढाते थे। पुराने शास्त्री-लोग स्त्रियों के उपनिषदादि पढने के विरुद्ध होते थे। उन्होंने उदारता से सभी को विद्यादान किया। हम कुछ शिष्याएँ रुद्र, पवमान आदि पढी हुई थीं। वे कहते, अवश्य रुद्र पठन करो, पवमान-पठन करो परंतु अपने घर में। उसका व्यवसाय मत करो।

वे लोभ से हमेशा दूर रहे। अध्यापन का, प्रवचनों का उन्होंने कहीं, किसी भी समय व्यापार नहीं किया। अनेकों से सम्मान के लिए निमंत्रण आते।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम ई. स. २०१५ *

दिनांक	स्थान	कथा
२०-०५ से २६-०५	स्वर्गाश्रम (उ.खंड)	भागवत कथा
२७-०५ से ०४-०६	स्वर्गाश्रम (उ.खंड)	महाभारत कथा
०६-०६ से १३-०६	स्वर्गाश्रम (उ.खंड)	गीता साधना शिविर
१७-०६ से २३-०६	तिरुपति (आंध्रप्रदेश)	एक सौ आठ भागवत कथा
२६-०६ से ०२-०७	आलंदी (महाराष्ट्र)	ज्ञानेश्वरी भावकथा
०३-०७ से ०९-०७	पुणे (महाराष्ट्र)	भागवत कथा-
१०-०७ से १६-०७	ढालेगांव (महाराष्ट्र)	महाभारत कथा
१८-०७ से २६-०७	कोलकाता (प. बंगाल)	देवी भागवत कथा
३१ जुलाई	औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	गुरुपौर्णिमा
०१-०८ से १५-०८	देवगड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	हरिहर भक्ति महोत्सव
०५-०९ से ०६-०९	नाशिक (महाराष्ट्र)	संत संमेलन
०८-०९ से १४-०९	त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र)	महाभारत कथा
१४-०९ से २०-०९	नाशिक (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
२२-०९ से २८-०९	वृंदावन (उत्तर प्रदेश)	भागवत कथा
२९-०९ से ०३-१०	दिल्ली (रामकृष्णपुरम्)	महाभारत संदेश
०४-१० से ०८-१०	मुंबई (प्रेमपुरी आश्रम)	दासबोध कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क :- धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे-विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६
कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589, **हनुमान :-** 09420131000
Website : www.dharmashree.org Email : dharmashree123@gmail.com

परंतु जहाँ तक हो सके वे उनसे दूर ही रहते। मुझे याद है, महाराष्ट्र राज्य-सरकार की ओर से सम्मान होनेवाला था। वे वहाँ नहीं गये। अंत में अधिकारियों ने घर आकर उनका सम्मान किया। सम्मान के महावस्त्र (शाल) और श्रीफल का स्वीकार करते परंतु धनराशि को नमस्कार कर लौटा देते। और तो और उन्होंने अपना निवृत्ति-वेतन भी आगे चलकर लौटा दिया। 'मुझे निवृत्ति-वेतन न दें।' इस प्रकार की प्रार्थना करनेवाले शायद ही कोई मिलें। उनका धन था उनके छात्र। दादा, पिता, पुत्र-इस प्रकार तीन पीढियों को उन्होंने पढाया है। उनका घर परिचित, अपरिचित छात्रों का ही घर था। स्कूल के बच्चे भी भोजन करने शास्त्रीजी के घर ही आते थे। जीवन रसिकता से जीते थे, पर रसिकता याने ऐहिकता नहीं, लोभ नहीं। अपरिग्रह, अयाचित वृत्ति, सदैव विद्यादान, सदैव तृप्त, सदैव प्रसन्न, सदैव हितकारी, सच्चा वैदिक अब नहीं रहा। उनके जैसा कुशल अध्यापक मैंने नहीं देखा। पूज्य पांडुरंग शास्त्री आठवले कहा करते थे -

विद्वत्वं दक्षता शीलं संक्रांतिरनुशीलनम्।
शिक्षकस्य गुणाः सप्त सचेतस्त्वं प्रसन्नता।।

इन सारे गुणों से मंडित, छात्र-वत्सल, अध्यापक अब नहीं रहा।

वज्रसूचिकोपनिषद कहती है कि जन्म से, जाति से, ज्ञान से, कर्म से, धर्म से कोई ब्राह्मण नहीं बनता। जिसने परब्रह्म का सक्षात्कार किया, जो स्वयं ब्रह्म बन गया है वह ब्राह्मण। उन्होंने गेरुएँ वस्त्र नहीं पहने, गृहस्थ ही बने रहे परंतु मन से निर्लिप्त, परमहंस ही रहे। ब्रह्मस्वरूप रहे।

ऐसे ब्राह्मण को कोटि कोटि प्रणाम।

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

महर्षि वेदव्यास पूजन एवं साधक सम्मेलन

दि. ३० जुलाई एवं ३१ जुलाई, २०१५

।। स्नेह – निमंत्रण ।।

कार्यक्रम स्थान : अग्रसेन भवन, सिडको, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

बन्धुवर,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण !

आपको यह सूचित करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का साधक सम्मेलन औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में आयोजित किया जा रहा है। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी (आचार्य श्री किशोरजी व्यास) महाराज गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे बीच होंगे। इस उत्सव में आप साग्रह आमंत्रित हैं।

भवदीय

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ***संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल***

* साधक सम्मेलन *

(गुरुवार, दिनांक ३० जुलाई, २०१५)

दोपहर : ४.०० से ४.३० सामूहिक जपानुष्ठान
४.३० से ५.३० पू. महाराजश्री के प्रवचन/
५.३० से ६.०० संवाद,

रात्रि : ७.३० से ९.०० भोजन /९.०० से १०.०० स्नेह मिलन, गुणदर्शन/संवाद

विशेष : सभी साधक कृपया ३० जुलाई, २०१५ दोपहर ३ बजे तक आयोजन स्थल पर पहुँच जाएँ।

*महर्षि वेदव्यास पूजन *

(शुक्रवार, दि. ३१ जुलाई २०१५)

महर्षि वेदव्यास जी भगवान् नारायण की ज्ञानकला के अवतार हैं, समस्त प्राचीन ऋषिमुनियों के प्रतिनिधि हैं, सनातन धर्म के समस्त संप्रदायों के परमाचार्य हैं, भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च उद्गाता हैं। वे गुरु–तत्त्व का साकार विग्रह हैं। संपूर्ण भारतीय संस्कृति ने उन्हें अपने गुरु रूप में स्वीकार किया है। कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण–पूजन हमारा सांस्कृतिक उत्सव है। 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के वार्षिकोत्सव के रूप में यह मंगल–समारोह **इस वर्ष औरंगाबाद में स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज की प्रेरक उपस्थिति में मनाया जाएगा।**

सभी भाविक-भक्तों से अनुरोध है कि इस उत्सव में सहभागी होकर पुण्यलाभ अर्जित करें।

कार्यक्रम

प्रातः : ५.०० प्रातःस्मरण/७.०० से ७.३० : उपासना, प्रार्थना/७.३० से ८.३० : अल्पाहार/
८.३० से १० : अभिषेक, महापूजा/१०.३० से ११.३० : हवन-संकीर्तन/
११.३० से १२ : कार्यनिवेदन, आशीर्वचन तथा आरती, दर्शन एवं समर्पण/
दोपहर : १२.०० से १.०० तक गुरुदर्शन, समर्पण/१.०० से २.३० महाप्रसाद/३.०० साधक प्रस्थान

संपर्क

१) श्री. श्यामसुंदरजी श्रीनिवास राठी–९४२२२०६७३२
२) सौ. पद्माजी तापडिया–९४२२२०३८५८
३) श्री.सत्यनारायणजी जाजू–९८२३०४६२३७
४) पंडित श्री. विजयकुमारजी पलोड–९४२२७०२९१५
५) श्री. सतीशजी साबू–९४२२७०१६२१

।। श्री हरिः ।।

श्री हरि–हर भक्ति महोत्सव

श्री दत्त मंदिर संस्थान, श्रीक्षेत्र देवगड, ता. नेवासा, जि. अहमदनगर–४१४६०३
दूरभाष : ०२४२७–२०३१११ * श्री. चांगदेव – मो. ९७६६४८०६४२

शनिवार दि. १ अगस्त, २०१५ से शनिवार दि. १५ अगस्त २०१५ तक के अंतर्गत होने वाले विभिन्न उपासना कार्यक्रम

प्रातः ६.०० से ८.३० **श्री महालक्ष्मी याग**

प्रातः ६.३० से ८.३० चतुःसहस्र पार्थिव शिवलिंगार्चन/ चतुःसहस्र श्रीयंत्र कुंकुमार्चना एवं शिवपूजा (सहस्र बिल्वार्चन), श्रीकृष्णपूजा (सहस्र तुलसीअर्चन) आदि

प्रातः ९.०० से १.०० **श्रीमद् भागवत कथा** (हिंदी में) **प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज**
मुख्य कथा यजमान श्री. श्यामसुंदरजी श्रीनिवासजी राठी, औरंगाबाद

अपराह्न ३.०० से ३.३० श्री शिवमहिम्न एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ

४.०० से ६.०० **श्रीराधा – गोपाल प्रभु झूलन महोत्सव, पदगान एवं आरती,**
संचालन : गोवत्स पूज्य श्री. राधाकृष्णजी महाराज
झूलन महोत्सव मुख्य यजमान सौ. अर्चना एवं श्री. नितीनजी तोतला, जालना।

सायं ५.३० से ७.३० लघुरुद्र अभिषेक

इस सरस भक्ति महोत्सव में सम्मिलित होकर **श्रीमद् भागवत कथा** का श्रवण करना एवं विविध पूजा-अर्चनाओं में सहभागी होना परम पुण्यवान के लिये ही संभव है। आपसे हार्दिक अनुरोध है कि आप सपरिवार इसमें सहभागी हों एवं अपने परिचितों को भी यह जानकारी देकर इस पुण्यार्जन के लिये प्रेरित करें।

भागवत कथा : प्रातः ९ से १ तक तथा राधाकृष्ण झूलनोत्सव : सायं. ६ से ७ तक
दिशा चॅनल पर लाईव्ह टेलिकास्ट होगा।

* सूचना संकेत *

१) पार्थिव सहस्र शिवलिंगार्चन, लघुरुद्रअभिषेक, श्रीयंत्र-कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चन तथा झूला आरती के दैनिक यजमान आप बन सकते हैं। हर आराधना की अलग-अलग सेवा (भेंट) निर्धारित रहेगी; जिसकी जानकारी श्री. दीपकजी लड्डा, औरंगाबाद से (मो.नं. नीचे देखें) प्राप्त की जा सकती है।

२) कथा अथवा आराधना, अभिषेक, अर्चना के यजमानों को अपने साथ कुछ भी सामग्री लाने की आवश्यकता नहीं है, पर पूजा के उपयुक्त भारतीय परिधान की अनिवार्यता के कारण अपने परिधान अवश्य लायें।

-: भोजन एवं निवास व्यवस्था :-

३) **सामान्य निवास :-** बडे कक्षों में बिछायत एवं पंखे के साथ प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन एक सौ रूपये मात्र। कॉट (चौपाई) आवश्यक हो तो प्रति व्यक्ति प्रतिदिन पचास रूपये अधिक। (आरक्षण आवश्यक नहीं।)
विशेष निवास :- स्विस कॉटेज (टेंट कुटिर) २ से ६ व्यक्ति हेतु। कॉट (चौपाई) अलग टॉइलेट, बेड, सोफा, पंखा, ड्रेसिंग टेबल आदि सुविधाओं के साथ। रु. दो हजार प्रतिदिन। (आरक्षण आवश्यक।)

आरक्षण हेतु संपर्क : श्री. दीपकजी लड्डा ०९४२२१७६५२६

४) सशुल्क एवं निःशुल्क भोजन व्यवस्था सभी की वहीं की जा रही है। संयोजक - श्री चन्द्रकान्त केले, धुलिया एवं श्रीमती ललितादेवी मालपाणी जी परिवार, संगमनेर।

-: जिन महानुभावों का होटलमें रहना है उनके लिए :-

नेवासा - १० कि.मी., औरंगाबाद - ५० कि.मी., अहमदनगर - ६० कि.मी.

यहाँ कर सकेंगे। वहाँ से आने जाने का यात्रा प्रबंध उन्हे स्वयं करना होगा।

५) निवास एवं भोजनविषयक उपरोक्त नियम सभी कथा यजमान, श्रोता एवं सत्संगी भाई-बहनों के लिये एक समान ही रहेंगे।

६) श्रावण मासिक कथा में तपस्या के लिये पधारना है - यह भान रहें। नित्योपयोगी चीजें तथा आवश्यक दवा-औषधि साथ रखें, पर मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण आदि चीजें बिल्कुल न लावें।

७) किसी भी प्रकार के यजमान न बनने पर भी सभी भाविक कथा श्रवण, पूजा दर्शन, स्तोत्र पाठ, पारायण-कीर्तनादि सभी कार्यक्रमों में श्रद्धापूर्वक निःसंकोच सहभागी हो सकते हैं।

८) अपनी भेंट, दान-दक्षिणा आदि आर्थिक सेवा कृपया '**श्रीकृष्ण सेवा निधि**' ट्रस्ट के नाम से प्रदान कर रसीद प्राप्त करें। श्रीकृष्ण सेवा निधि, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६, दूरभाष ०२०-२५६५२५८९

९) इस संपूर्ण आयोजन का दायित्व एवं निर्णय के सभी अधिकार संयोजन समिति के अधीन रहेंगे। किसी भी विषय में अधिक जानकारी के लिये संयोजन समिति अथवा व्यवस्थापक मंडल से संपर्क करें।

-: संपर्क :-

● श्री चंद्रकांत जी केले काका (धुलिया), ०९४२२२८५४६८ ● श्री. दीपकजी लड्डा, (औरंगाबाद) ०९४२२१७६५२६ ● श्री नारायणदास जी मारू (सूरत), ०९४२७८३५५०९, ● डॉ. द्वारकादास जी लड्डा (मानवत) ९४२३१४१३१८, ● श्री. अविनाश मोरे काका (पुणे) ९४२०९००४२५

● यात्रा मार्गदर्शन : श्री दत्तमंदिर संस्थान महाराष्ट्र के अहमदनगर-औरंगाबाद मार्ग पर दोनों तरफसे लगभग ७० कि.मी. पर है। सबसे समीप हवाई अड्डा औरंगाबाद का है। रेलसे यात्रा करनेवाले अपनी सुविधानुसार औरंगाबाद, अहमदनगर, बेलापुर रोड अथवा मनमाड स्थानकों पर उतरें। बस से यात्रा करनेवाले नेवासा फाटा स्टॉप पर उतरें। वहाँसे आटो से आप मंदिर पहुँच सकेंगे।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/१०/२०१४ से दिनांक ३१/०३/२०१५ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

अमरावती: श्रीमती प्यारीबाई अटल चॅरि. ट्रस्ट, **सोलापुर:** मे. मथुरा ॲग्रो इंडस्ट्रीज, श्री. प्रदीपजी कुलकर्णी, **कोटा:** मे. एलेन करियर इन्स्टिट्यूट, **मुंबई:** आदित्य विक्रम बिर्ला मेमो ट्रस्ट, **जयपुर:** श्री जयनारायण जाजू चॅरि. ट्रस्ट, **पुणे:** श्री. भारतभूषण सांकये, श्री. कुलभूषण सांकये, श्री. राजकुमारजी मुरडिया, श्री. मनीषजी मिणियार, श्रीमती प्रभा शेंदुर्णीकर, **संगमनेर:** श्री. मालपाणी परिवार चॅरि. ट्रस्ट,

रु. ५० हजार से १ लाख

इटारसी: मे. राघव इंडस्ट्रीज, मे. रेनू ट्रेडर्स, **पुणे:** मे. व्यापारी मित्र पब्लिकेशन्स प्रा. लि., प्रो. शंकर यादव पोंक्षे एज्युकेशन ट्रस्ट, श्री. सचिनजी सोमाणी, **पंढरपुर:** श्री. भानुदास काशिगिरी गोसावी, **कोलकाता:** श्री. गौरी शंकरजी झंवर, श्री. कोटरीवाला सेवा निधि, श्री. बालकृष्णदासजी मुंदडा परिवार, श्री. चितलांगिया चॅरि. ट्रस्ट, मे. अनुग्रह फाउंडेशन, मे. हीरा मार्बल अँड ग्रॅनाईटस, **पानिपत:** श्री. अग्रवाल परिवार, **मुंबई:** श्रीमती गोदावरी देवी तापडिया, **इचलकरंजी:** श्री. रामकुमार मर्दा सेवा सदन ट्रस्ट, **नागपुर:** श्री. पुरुषोत्तमजी रामदासानी, **कोटा:** श्रीमती द्वारकाबाई दाधीच, **बुंदी:** श्री. महेशजी दाधीच, **जसवंतगढ:** श्री. श्याम सेवा ट्रस्ट, **सिलिगुरी:** श्री. अमितजी अगरवाला फाउंडेशन, **सूरत:** श्री. मारु परिवार, **नासिक:** सौ. वंदना बारटक्के, **सोलापुर:** श्री. प्रदीपजी कुलकर्णी, **औरंगाबाद:** डॉ. श्री. महेशजी लड्ढा.

रु. २५ हजार से ५० हजार

कोलकाता: श्री. कालूराम पेरिवाल जनकल्याण ट्रस्ट, **मुंबई:** श्री. काबरा फाउंडेशन, श्री. पंकजजी जाजू, **बंगलोर:** श्री. कैलाशचंदजी लड्ढा, **चेन्नई:** श्री. किशनलालजी झावर, **चांदूरबाजार:** डॉ. श्री. विजयकुमारजी हरकुट.

रु. १० हजार से २५ हजार

इटारसी: श्री. गुलाबचंदजी अग्रवाल, श्री. फूलचंदजी शर्मा, श्रीमती कृष्णा पाठक, श्री. चंद्रशेखरजी सोनी, श्री. संदीपजी खंडेलवाल, **बंगलोर:** श्री. रामेश्वरलालजी लड्ढा, श्री. लड्ढा चॅरिटेबल ट्रस्ट, मे. बाबूलाल गुप्ता फाउंडेशन, श्री. कैलाशचंद लड्ढा, **विजयवाडा:** श्री. वेणुगोपालजी तापडिया, **इलाहाबाद:** श्री. शशिकांतजी साठे, **भोपाल:** श्री. एच. पी. तेंगुरिया, **बेळगाव:** कु. अस्मिता पवार, **पुणे:** श्री. सुजीतजी देशमुख, श्री. यशजी तापडिया, श्री. लक्ष्मणजी जोशी, श्री. महेशजी खडके, मे. न्यू महादेव ज्वेलर्स, श्री. रोहितजी मुंदडा, श्री. मकरंद कुलकर्णी, श्री. अण्णाराव दळवी, **नवी मुंबई:** श्रीमती रेखा लाहोटी, श्रीमती तमन्ना भाटिया, मे.व्ही.पी. बेडेकर अँड सन्स, **नांदेड:** मे. राईडवेल मोटर्स, **पुनावळे:** मे. साई रेडिमिक्स काँक्रीट, **सोलापुर:** मे. चौधरी फ्रेट कॅरिअर, डॉ. श्री. एस. प्रभाकर, मे. पी. पी. पटेल अँड कं., श्री. गोवर्धनजी चाटला, मे. मेहुल कनस्ट्रक्शन कं., श्री. गिरीशजी तळपल्लीकर, श्री. बालाप्रसादजी मुंदडा, सौ. प्रभावती धोका, डॉ. श्री. सत्येंद्रजी तोष्णीवाल, मे. नटराज प्रीस्ट्रेस, श्री. विठ्ठलजी लाहोटी, श्री. किशोरजी चांडक, श्री. ओमप्रकाशजी डागा, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पी मुद्गल, **अकोला:** श्री. कालूराम रुहातिया चॅरि. ट्रस्ट, श्रीमती निर्मला राठी, **देहरादून:** श्री. रविन्द्रजी गोडबोले, **अंबाजोगाई:** श्री. राजेश्वरजी जोशी, **हैदराबाद:** श्री. महेशजी व्यास, **अमरावती:** श्री. सत्यनारायणजी रतावा, श्री. नवजीवन चॅरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती अनामिका, श्री. नारायणदासजी पनपालिया, श्री. मोहनजी बियाणी, सौ. आशा लड्ढा, श्रीमती राधादेवी काकाणी, डॉ. श्री. हरगोविंदजी भट्टड, श्री. आनंद सिंघानिया, श्रीमती आयुश्री सिंघानिया, **सहारनपुर:** श्रीमती रजनी माहेश्वरी, **बडनेरा:** श्री. रामअवतारजी अग्रवाल परिवार, श्रीमती रत्नाबाई काकाणी, **वालूर:** श्री. वसंतरावजी चौधरी, **तळेगाव:** श्री. सुधीरराव कुलकर्णी, **गोरखपुर:** श्री. शंकर शरण प्रसादजी श्रीवास्तव, **खामगाव:** कु. रुचिता धंदर, **जयपुर:** श्री. शशिकांतजी जोशी, **अर्जुनी:** श्री. घनश्यामदासजी भुतडा, **चेन्नई:** श्री. तरुणजी बिसानी, श्री.

कन्हैय्यालालजी भट्टड, श्रीमती राधा राठी, श्री. ओमप्रकाशजी मालपाणी, श्रीमती शांता डागा, श्री. आर. विनोदकुमार, श्रीमती कल्पना नामदेव, श्रीमती मानकुंवर फोमरा, **सूरत:** श्री. मोहनलालजी भैय्या, श्रीमती प्रमिला भंडारी, श्रीमती सीतादेवी मोहता, श्रीमती सुनीता धीरन,मे. कृष्णा टेरीन प्रा. लि., **जेतपुर:** श्री. जीवनलाल लक्ष्मणदास राठी चॅरि. ट्रस्ट, **पटियाला:** श्रीमती नवनीत मल्होत्रा, **चैगलपेट:** श्री. घनश्यामदासजी मालानी, श्री. हरिनिवाजी मुंदडा, श्री. राधेश्यामजी लखोटिया, **दिल्ली:** श्री. विजयजी अग्रवाल, श्री. महेंद्रजी भंडारी, सुश्री शशीबाला शर्मा, **आमगाव:** श्रीमती केशरदेवी भुतडा, **नागपुर:** श्रीमती शोभा गांधी, श्री. अशोकजी खानोलकर, श्रीमती गायत्री रामदासी, श्रीमती कुसुम बाजोरिया, **खमारी:** श्रीमती सुषमा फाफट, **कोटा:** श्री. विठ्ठलदासजी डागा, श्री. शामसुंदरजी अरोडा, मे. चेतना सेल्स कार्पोरेशन, श्रीमती शशी अग्रवाल, श्री. बृजमोहनजी शर्मा, श्रीमती उर्मिला राहुल मिश्रा, महर्षि दधीचि छात्रावास समिति, श्री. गिरिराज न्याती परिवार, श्री. उमाशंकरजी डालमिया, श्री. मनू पालीवाल, श्री योगेंद्र पालजी गांधी, श्री. भानुदत्तजी शर्मा, श्री. मणिरामजी अग्रवाल, श्री. अंशुलजी विजय, श्री. लक्ष्मी कुमारजी नुवाल, श्री. रमेशजी अग्रवाल, **आदित्यनगर:** श्री. नीरवजी ध्रुव, **मेहरुण:** सौ. पुष्पा ईखे, **जळगाव:** श्री. नंदलालजी काबरा, सौ. चारुशीला जाखोटिया, श्री. योगेश पी. जांगले, सौ. संध्या पाटील, श्री. जनार्दनजी पाठक, सौ. रमीलाबेन मंडोरा, माहेश्वरी महिला मंडल, श्री. सुभाषजी जाखोटे, श्री. राम विलासजी राठी, श्री. यशवंतरावजी पवार, श्रीमती किरण झंवर, श्री. पुरुषोत्तमजी अग्रवाल, श्री. रामदयालजी सोनी, सौ. राजकमल लाठी, धर्मरक्षा समिति, श्री. दिनेशजी कक्कड, श्री. जे. के. महाजन, श्री. सुधाकरजी नारखेडे, **नंदुरबार:** श्री. बालकृष्णजी मोडानी, **धुळे:** श्री. राजकुमारजी वर्मा, श्रीमती कांचनबाई वर्मा, **कोलकाता:** श्री. ललितकुमार झंवर, भारत विकास परिषद, श्री. गिरीशकुमार मोहता, श्री. विश्वनाथजी राठी, श्री. किशनलालजी सोमानी, श्री. आनंदजी मोहता, श्री. कृष्णचंद्रजी राठी, श्री. पुरुषोत्तमजी सारडा, श्री. पवनजी डागा, श्रीमती सावित्रीदेवी साबू, श्रीमती सीतादेवी देवडा, श्री. अनुराग साबू, श्री. कन्हैय्यालाल लोहिया ट्रस्ट, श्रीमती छोटीदेवी झंवर, श्रीमती एस.डी. माहेश्वरी, श्रीमती शशि डागा, **बऱ्हानपुर:** श्रीमती रामेश्वरी देवी झंवर, **आग्रा:** डॉ. श्री. रणजीतजी सिंह, **लखनौ:** कु. जुही अग्रवाल, **इंदौर:** श्रीमती शांतीदेवी गुप्ता, **इलाहाबाद:** श्री. अशोक कुमार देवरा, श्री. अनिल कुमार देवरा, श्री. समीर देवरा, **सोनई:** सौ. सविता चांडक, **जबलपुर:** डॉ. श्री. जीतेंद्रजी जामदार, **बारन:** श्री. विष्णुकुमारजी साबू, **हजारीबाग:** श्री. घनश्यामजी मुनका, **गुडगांव:** श्रीमती अनामिका कलंत्री.

रु. ५ हजार से १० हजार

बंगलोर: श्रीमती किरण लड्ढा, **इटारसी:** श्री. हरिनारायणजी खंडेलवाल, श्रीमती गोदावरीदेवी खंडेलवाल, **हैदराबाद:** श्री. हनुमंतराव कुलकर्णी, श्री. करनादानजी डागा, श्रीमती पद्मा सुंठवाल, **सोलापुर:** श्री. मधुकरराव फडणीस, गोविंदलालजी मुंदडा, डॉ. श्री. राजेंद्रजी घुली, डॉ. सौ. जयश्री कुलकर्णी, मे. भारत पॅकेजिंग, श्रीमती सरोज कुलकर्णी, सौ. अलकनंदा मुंदडा, **अलमट्टी:** श्री. घनश्यामदासजी राठी, **खामगाव:** श्री. मोहनलालजी इंदोरिया, **कोलकाता:** श्री. चंद्रकुमारजी काकडा, श्रीमती आशा अग्रवाल, श्रीमती संगीता बजोरिया, श्रीमती तारादेवी मोहता, श्री. बालकृष्णदासजी मुंदडा परिवार, श्री. श्यामलालजी कर्वा, **भिलवाडा:** श्रीमती गीतादेवी झंवर, **गाजियाबाद:** श्री. कृष्णदेवजी गुप्ता, श्री. जगदीशजी राठी, **कोटा:** श्रीमती विमला मालपाणी, श्रीमती ललितादेवी बंसल, श्री. राम प्रसादजी बंग, श्रीमती उर्मिला मिश्रा, श्री. रवीन्द्रजी शर्मा, **जयपुर:** श्री. लोकेंद्र किशोरजी माहेश्वरी, श्री. नरेंद्र प्रसादजी शर्मा, **पानिपत:** श्री. अग्रवाल परिवार, **पुणे:** गीता परिवार, श्री. राजेशजी कुलकर्णी, श्रीमती सीमा रेगे, श्री. कुणालजी देशमुख, श्री. श्रीपादजी देशमुख, श्री. सुनीलजी गाडेकर, सौ. शोभा पुरोहित, श्री. अमरेंद्रजी भट, **हिसार:** श्री. राजारामजी जुल्का, **कल्याण:** श्री. प्रसादजी देशपांडे, **जोधपुर:** श्री. एम. जगदीशजी व्यास, **अमरावती:** श्री. आशीषजी हरकुट, सौ. मनिषा हरकुट, श्री. सुभाषजी हेडा, सौ. कौसल्यादेवी हेडा, श्री. रामस्वरूपजी हेडा, श्री. किशोरजी काकाणी, **न्यू पनवेल:** श्री. संजयजी तावरे, **अकोला:** मे. गजानन ट्रेडिंग कं., श्री. श्रीरामजी पाटोदिया, **नई दिल्ली:** श्री. एस.सी. गुप्ता, **मुंबई:** श्री. रमेशजी काबरा, श्रीमती उज्ज्वला वेलणकर, मे. थ्रेडस टेक्नॉलॉजी, **चंद्रपुर:** श्रीमती शांताबाई मराठे, **चेन्नई:** श्रीमती कौशल्यादेवी भैय्या, **अडावद:** सौ. शकुंतला दहाड.